



दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 114

सरोकार

गांधी की खादी को दे दिए 'उमंग' भरे नए रंग

इंदौर : 27 साल की उमंग श्रीधर ने नई पीढ़ी के बीच गांधी को लौटा लाने की सच्ची



कोशिश की है। फोर्स-30 अंडर-30 में जगह बना चुकी उमंग और उनके स्टार्टअप खाड़िजी ने खादी को बड़ी चतुराई से वैश्विक बाजार मुहैया कराया है। (पेज-11)

जागरण विशेष

यहां मां के जयकारों के साथ गूजते हैं शहीदों के तराने

जम्मू : ऊधमपुर स्थित पिगला माता मंदिर में हर शारदीय नवरात्र पर शहीद जवानों के



नाम से अखंड च्योति प्रचलित की जाती है। पिगला माता यात्रा में शहीदों के परिजन भी पहुंचते हैं। जिनका सम्मान किया जाता है। (पेज-10)

न्यूज गैलरी

सिटी न्यूज ▶ पृष्ठ 2

रामलीला-दुर्गा पूजा में ज्यादा देर तक बजा सकेंगे लाउडस्पीकर

नई दिल्ली : दिल्ली सरकार ने राजधानी में रामलीला और दुर्गा पूजा के दौरान लाउडस्पीकर के प्रयोग का समय रात 10 बजे से बढ़ाकर रात 12 बजे तक कर दिया है। मुख्यमंत्री के आदेश पर पर्यावरण सचिव ने इस संबंध में संकुलर जारी किया है।

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

एएसआई को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण : हिंदू पक्ष

नई दिल्ली : अयोध्या राम जन्मभूमि पर मालिकाना हक का दावा कर रहे भगवान रामलला के वकील सीएस वैद्यनाथन ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में कहा कि मुस्लिम पक्ष का विश्व विख्यात संस्था एएसआई (भारतीय पुरातन सर्वेक्षण) को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण है।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 5

खनन घोटाले में दो आइएएस अफसरों के ठिकानों पर छापे

लखनऊ : उत्तर प्रदेश में सपा सरकार में हुए करोड़ों के खनन घोटाले के मामले में सीबीआई दिल्ली की टीम ने मंगलवार को लखनऊ में दो आइएएस अफसरों व सहारनपुर में पूर्व एमएलसी हाजी मुहम्मद इकबाल के घर समेत 11 स्थानों पर छापे मारे। देहरादून में भी कुछ ठिकानों पर छापेमारी की गई है।

कारोबार ▶ पृष्ठ 12

सितंबर में 91916 करोड़ रुपये रहा जीएसटी संग्रह

नई दिल्ली : सरकार को वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) से मिलने वाले राजस्व में कमी का सिलसिला बना हुआ है। सितंबर, 2019 में जीएसटी से सरकार को 91,916 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

नई चुनौती	
टेस्ट सीरीज भारत द. अफ्रीका	सुबह 9:00 बजे से स्थान : विशाखापत्तनम प्रसारण : स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क

यादों का झरोखा

महात्मा गांधी ने पहली अगस्त 1947 को कश्मीर में महाराजा हरि सिंह और उनकी पत्नी से की थी मुलाकात, महात्मा गांधी एक ही बार जम्मू कश्मीर आए और 10 दिन रुके



15 अगस्त 1947

को कश्मीर के अंतिम शासक महाराजा हरि सिंह से भेंट करने जम्मू कश्मीर आए थे। महाराजा और महात्मा गांधी के बीच वार्ता का ब्योरा तो मौजूद नहीं है, लेकिन तत्कालीन राजनीतिक हालात और उसके बाद कश्मीर के घटनाक्रम में आए बदलाव के मद्देनजर माना जाता है कि बापू जम्मू कश्मीर के भारत में विलय को यकीनी बनाने आए थे। महात्मा गांधी अपने पूरे जीवनकाल में एक ही बार जम्मू कश्मीर आए। उनका यह दौरा करीब 10 दिन चला था। उनके इस दौर को लेकर बहुत कुछ कहा-सुना और लिखा गया। अलबत्ता, 1947 के तत्कालीन हालात, जम्मू कश्मीर में महाराजा के खिलाफ जारी आंदोलन और विलय पर संशय के

पर मुहर लगा दी है।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस आदर्श कुमार गोयल और यूयू ललित की पीठ ने 20 मार्च, 2018 को गिरफ्तारी की प्रक्रिया को शिथिल करते हुए अग्रिम जमानत का प्रावधान कर दिया था। साथ ही ऐसे मामलों को भी जांच के बाद दर्ज करने के निर्देश दिए थे। कोर्ट के इस फैसले के बाद उस समय देशभर में दलित संगठनों ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया था। जिसके बाद सरकार ने कोर्ट के फैसले पर पुनर्विचार याचिका दखिल की थी। हालांकि फैसला आने में देरी होते देख सरकार ने पहले अध्यादेश और बाद में संसद से बिल पारित लागू कर दिया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने भी इस

अग्रिम जमानत नहीं देने के पुराने एक्ट को ठहराया सही, लेकिन पूर्ण प्रतिबंध से इन्कार



व्यवस्था को बहाल किया था। साथ ही सुप्रीम कोर्ट से फैसले पर पुनर्विचार की अपील की थी। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस अरुण मिश्रा,

हम इस पवित्र उम्मीद के साथ अपनी बात खत्म करते हैं कि एक दिन ऐसा आएगा जेसा सिंधान निर्माताओं ने उम्मीद की थी, जब ऐसे कानून की जरूरत नहीं होगी, एससी-एसटी-ओबीसी को कोई आरक्षण उपलब्ध कराने की जरूरत नहीं होगी, सभी मायनों में सिर्फ एक ही वर्ग के मनुष्य होंगे और कोई जाति व्यवस्था या एससी-एसटी-ओबीसी वर्ग नहीं होगा, सभी नागरिक बंधनमुक्त होंगे और सिंधान के लक्ष्य के मुताबिक समान होंगे। - सुप्रीम कोर्ट पीठ की टिप्पणी

जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस बीआर गवई की पीठ ने मंगलवार को पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई करते हुए निचली

फड़नवीस पर चलेगा आपराधिक मामलों की सूचना न देने का केस



नई दिल्ली, प्रे्ट : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस के खिलाफ चुनावी हलफनामे में आपराधिक मामलों की जानकारी नहीं देने का मुकदमा चलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अपने फैसले में कहा कि चुनाव के दौरान दखिल हलफनामे में आपराधिक मामलों की जानकारी नहीं देने के कारण मुख्यमंत्री को मुकदमे का सामना करना होगा। फैसले के बाद मुख्यमंत्री फड़नवीस के कार्यालय ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा है कि वह कहना गलत और अपमानजनक है कि शीर्ष कोर्ट ने मुख्यमंत्री के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी है। शीर्ष कोर्ट का फैसला फड़नवीस के जनप्रतिनिधि बने रहने या अगला चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध नहीं लगाता है।

मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई, जस्टिस दीपक गुता और अनिरुद्ध बोस की पीठ ने अपने फैसले में देवेंद्र फड़नवीस द्वारा दो लंबित आपराधिक मामलों की जानकारी उपलब्ध नहीं कराने के मामले में बांबे हाई कोर्ट का आदेश निरस्त कर दिया। पीठ ने कहा, 'प्रतिवादी (फड़नवीस) को दो लंबित मामलों की जानकारी थी।' शीर्ष अदालत ने सतीश उकी की चुनौती याचिका पर यह फैसला दिया है। हाई कोर्ट ने कहा था कि फड़नवीस को इस कथित अपराध के लिए जनप्रतिनिधित्व कानून के तहत मुकदमे का सामना करने की जरूरत नहीं है। हमारा सरोकार सीमित मुद्दे पर है। कोर्ट पेज>>3

कोर्ट के फैसले को संविधान की भावना के विपरीत बताया और कहा, 'एससी-एसटी का संघर्ष अभी खत्म नहीं हुआ है। उन्हें अभी भी छुआछूत, दुर्व्यवहार और सामाजिक बहिष्कार जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में उनके संरक्षण से जुड़े कानून में बदलाव ठीक नहीं है।'

आज भी नियति से साक्षात्कार का प्रयोग कर रहा समाज : पीठ ने कहा कि भारतीय समाज आज भी नियति से साक्षात्कार का प्रयोग कर रहा है। आजादी के 70 साल बाद भी समाज में जारी छुआछूत और भेदभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए पीठ ने कहा कि दिल टटोलकर देखने की जरूरत है कि क्या

'हरिजन' ऊंची जाति के लोगों के साथ बगबरी के आधार पर उनसे हाथ मिला सकता है। क्या समाज मानसिकता और मानवीय गरिमा के उस स्तर पर पहुंचने में सक्षम हो गया है जहां जाति आधारित भेदभाव को खत्म किया जा सके। पहली नजर में मामला नहीं तो जमानत का अधिकारी होगा आरोपित : शीर्ष कोर्ट ने गिरफ्तारी पर अग्रिम जमानत पर रोक जरूर लगाई है, लेकिन अगर कोई प्रथमदृष्ट्या मामला नहीं बनता है तो आरोपित नियमों के तहत जमानत का हकदार होगा।

दुरुपयोग को शीर्ष कोर्ट ने बताया मानवीय गलती पेज>>3

बंगाल में एनआरसी लागू होकर रहेगा : अमित शाह

जागरण संवाददाता, कोलकाता

'बंगाल सहित देश में एनआरसी लागू होकर रहेगा। ममता बनर्जी जन विपक्ष में थीं तो बंगाल से घुसपैठियों को निकालने की बात करती थीं। इस मसले पर एक बार उन्होंने अपनी शाल स्पीकर के मुंह पर फेंक दी थी। अब जब ये घुसपैठिये उनके वोट बैंक बन गए हैं तो वह उन्हें हटाना नहीं चाहती।' यह बातें मंगलवार को कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में एनआरसी पर आयोजित संगोष्ठी में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कही। इस दौरान वह काफी आक्रामक नजर आए। उन्होंने कहा- 'देश से घुसपैठियों को खदेड़कर रहेंगे। इस पर केंद्र सरकार एनआरसी (राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर) विधेयक लाएगी। शरणार्थियों को नागरिकता देने को एनआरसी लागू करने से पहले नागरिकता संशोधन बिल पारित कराएगा जाएगा और बंगाल में भी एनआरसी को लागू किया जाएगा।' कहा, बंगाल में एनआरसी के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। ममता का यह कहना कि एनआरसी लागू होने पर लाखों हिंदुओं को बंगाल छोड़ना होगा, सबसे बड़ा झूठ है। भरोसा दिलाया कि सिर्फ घुसपैठियों को बाहर किया जाएगा। बता दें ममता बनर्जी सार्वजनिक मंचों पर कई बार कह चुकी हैं कि उनके रहते बंगाल में एनआरसी लागू नहीं होगा। शाह ने आगे कहा- 'बंगाल और अनुच्छेद 370 में स्पेशल कनेक्शन है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने ही नारा दिया था-एक निशान, एक विधान और एक प्रधान। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्त करने को लेकर हर जगह लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ कर रहे हैं।



कोलकाता में मंगलवार को एनआरसी पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह। जागरण

देश से किसी शरणार्थी को जाने नहीं देंगे और किसी घुसपैठि को रहने नहीं देंगे। मैं हिंदू, बौद्ध, सिख व जैन शरणार्थियों को इस बात का भरोसा दिलाता हूं। एनआरसी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। कोई भी देश इतने सारे घुसपैठियों के बोझ के साथ सही तरीके से चल नहीं सकता। इसे रोकना जरूरी है। -अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

ममता का शाह पर पलटवार पेज>>3

किस देश से क्या खरीदना है, ये हम तय करेंगे

वाशिंगटन, एएफपी : विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने साफ कहा है कि भारत को किस देश से क्या खरीदना है ये उसे ही तय करना है। कोई देश भारत को यह नहीं बता सकता है कि वह किस देश से कौन सा हथियार खरीदे और कौन सा नहीं। जयशंकर रूस से मिसाइल रक्षा प्रणाली खरीदने के भारत के फैसले पर अमेरिका की आपत्ति के सवाल का जवाब दे रहे थे। इस सौदे से नागर अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाने की धमकी तक दी है।

अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोपियो के साथ बैठक से पहले संवाददाताओं से बातचीत में जयशंकर ने कहा, भारत ने यह हमेशा से कहा है कि उसे किस देश से सैन्य उपकरण खरीदने हैं यह तय करना उसका संप्रभु अधिकार है। उन्होंने कहा, 'हम यह नहीं चाहेंगे कि कोई देश हमसे यह कहे कि रूस से हमें क्या खरीदना है और क्या नहीं, इसी तरह हम यह भी नहीं पसंद करेंगे कि कोई देश हमसे यह कहे कि अमेरिका से हमें क्या खरीदना है और क्या नहीं।' उल्लेखनीय है कि भारत ने पिछले साल

भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रूस से मिसाइल रक्षा प्रणाली सौदे को सही ठहराया

कहा, रक्षा खरीद पर अमेरिका की चिंताओं को दूर करने की कोशिश जारी



विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने वाशिंगटन में अपने अमेरिकी समकक्ष माइक पोपियो से मुलाकात की। एएनआई

रूस से 5.2 अरब डॉलर (35 हजार करोड़ रुपये) में पांच एन-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली खरीदने का सौदा किया है। अमेरिका ने रूस से हथियार के बड़े सौदे करने वाले देशों पर प्रतिबंध लगा रखे हैं। जयशंकर ने ईरान के मसले पर अमेरिका के साथ भारत के मतभेदों का भी उल्लेख किया। ट्रंप प्रशासन ने ईरान से तेल खरीदने पर प्रतिबंध लगा रखा है। भारत समेत कुछ देशों को छह महीने की छुट दी थी, जिसे अब खत्म कर दिया है। जयशंकर ने कहा कि हम अपनी नजर से ईरान को देखते हैं तो वह एक स्थिर और

संतुलित शक्ति के रूप में नजर आता है।

कश्मीर पर भारत का रुख स्पष्ट, किसी की मध्यस्थता स्वीकार नहीं : विदेश मंत्री जयशंकर ने कश्मीर में मध्यस्थता के संबंध में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयान पर कहा, 'भारत का रुख करीब 40 साल से इस बात को लेकर स्पष्ट है कि हम मध्यस्थता स्वीकार नहीं करेंगे... और जो कुछ भी बातचीत होनी है, वह द्विपक्षीय होगी।'

भारत से पाक की तुलना पर उठाए सवाल पेज>>3

भगवान, जाति, धर्म को नहीं मानते तो सरकार से प्रमाण पत्र की क्या जरूरत

दयानंद शर्मा, चंडीगढ़

नो कास्ट, नो रिलीजन, नो गॉड सर्टिफिकेट देने की मांग को हाई कोर्ट ने किया खारिज

टोहना के एक युवक को सरकार ने पहले दिया था प्रमाण पत्र, बाद में कर दिया रद

नो कास्ट, नो रिलीजन, नो गॉड सर्टिफिकेट दिए जाने की मांग संबंधी एक याचिका को हाई कोर्ट ने खारिज कर दिया है। हाई कोर्ट ने याची से सवाल किया कि अगर वह नास्तिक हैं तो सरकार से प्रमाण पत्र लेने की क्या जरूरत है? भगवान, जाति और धर्म को मानना या न मानना किसी भी व्यक्ति का निजी मामला है। टोहाना निवासी रवि कुमार नास्तिक हैं हरियाणा सरकार के उस आदेश को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी, जिसमें तहसीलदार द्वारा जारी नो कास्ट, नो रिलीजन, नो गॉड सर्टिफिकेट को रद करने का आदेश दिया गया था। याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में कहा कि वह जातिहीन समाज में विश्वास रखता है। वह प्रभावित थे। तथ्य भी इसकी पुष्टि करते हैं, क्योंकि महात्मा गांधी के दौरे के अगले ही दिन काक को प्रधानमंत्री पद से हटा दिया गया और उसके बाद शेख अब्दुल्ला ने भारत के साथ जाने का एलान कर दिया।

एससी-एसटी एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट ने पलटा अपना ही फैसला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (एससी-एसटी) एक्ट मामले में मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट से सरकार को कानूनी तौर पर बड़ी शहत मिली है। कोर्ट ने केंद्र सरकार की पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि पहले दिया गया फैसला संविधान की भावना के सम्मत नहीं था। जिसमें इस कानून के दुरुपयोग को रोकने के लिए तत्काल व गैरजमानती गिरफ्तारी पर रोक लगा दी गई थी। सरकार ने संसद से विधेयक पारित करकर इस फैसले को निरस्त करते हुए पुराना विधेयक लागू कर दिया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने भी इस

अब और नई याचिकाएं नहीं

31 अक्टूबर के बाद याचिकाएं महत्वहीन हो जाने की याचिकाकर्ताओं की आशंका पर पीठ ने कहा कि अगर फैसला उनके हक में आया तो कोर्ट घड़ी का कांटा वापस भी धुमा सकता है। यानी पुरानी स्थिति बहाल की जा सकती है। इसके अलावा कोर्ट ने अनुच्छेद 370 और पुनर्गठन कानून के मामले में दखिल याचिकाओं का जवाब देने के लिए केंद्र सरकार को चार सप्ताह का समय देते हुए मामले की सुनवाई 14 नवंबर तक रखाए गए हैं। इस पर सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि दिन में कोई प्रतिबंध नहीं है रात में जरूरत के हिसाब से प्रतिबंध लगाए जाते हैं। कोर्ट ने सरकार से इस बारे में दो सप्ताह में जवाब देने को कहा है। मामले में बहुत सी हस्तक्षेप अर्जियां दखिल होने पर भी कोर्ट ने सवाल उठाए। अनुच्छेद 370 को हटाने के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए संविधान पीठ ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन कानून लागू कर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख खरीदने के भारत के फैसले पर अमेरिका की आपत्ति के सवाल का जवाब दे रहे थे। इस सौदे से नागर अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाने की धमकी तक दी है।

अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोपियो के साथ बैठक से पहले संवाददाताओं से बातचीत में जयशंकर ने कहा, भारत ने यह हमेशा से कहा है कि उसे किस देश से सैन्य उपकरण खरीदने हैं यह तय करना उसका संप्रभु अधिकार है। उन्होंने कहा, 'हम यह नहीं चाहेंगे कि कोई देश हमसे यह कहे कि रूस से हमें क्या खरीदना है और क्या नहीं, इसी तरह हम यह भी नहीं पसंद करेंगे कि कोई देश हमसे यह कहे कि अमेरिका से हमें क्या खरीदना है और क्या नहीं।' उल्लेखनीय है कि भारत ने पिछले साल



अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में पुस्तक के लोकार्पण के मौके पर बोलते सरसंघचालक मोहन भागवत। जागरण

देशकाल, समय और परिस्थिति की कसौटी पर सामूहिक सहमति से फैसले लिए जाते हैं। विचारों में मतभेद हो सकता है, मनभेद नहीं होता। लोग अपने विचार रखने व लिखने को स्वतंत्र हैं। उन्होंने कहा, संघ की विचारधारा या संघ परिवार जैसी बातें कहना सही नहीं है। संघ को प्रगतिशील और व्यावहारिक बताते हुए उन्होंने कहा कि विचार स्थायी

नहीं हैं। यह देशकाल, समय व परिस्थितियों की प्रत्यावा के संदर्भ में बदलते रहते हैं। पर मूल में दो बातें स्थायी हैं-हिंदू और हिंदुस्तान। जब तक भारत को मातृभूमि मानने वाला और अपने आपको हिंदू कहने वाला इस भूमि पर एक भी व्यक्ति जीवित है, भारत वह हिंदू राष्ट्र है। हमारे राष्ट्र में भाषा, पंथ, राज्य के आधार पर विविधता में एकता है। संघ की विचारों की परिधि से व्यापक बताते हुए भागवत ने कहा, उनके पास भी संघ की व्याख्या के लिए शब्द नहीं हैं। वह भी यह दावा नहीं कर सकते कि संघ को समझ पाए हैं। संघ को यदि समझा जा सकता है तो इसकी संस्थापक डॉ. हेडगेवार के जीवन से। हमारे लिए झंडा अहम है। हनुमान और छत्रपति शिवाजी आदर्श हैं। इस मौके पर पूर्व मुख्य न्यायाधीश केजी बालाकृष्णन ने कहा, मुझे से अस्पृश्यता व जातिवाद मिटाने में अच्छा काम किया है।

जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय को यकीनी बनाने आए थे बापू

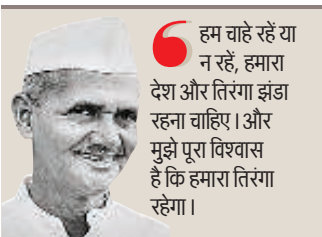
नवीन नवाज, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने को लेकर आज देश में जहां बहुत कुछ कहा सुना जा रहा है, वहीं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आजादी से कुछ दिन पूर्व पहली अगस्त 1947 को कश्मीर के अंतिम शासक महाराजा हरि सिंह से भेंट करने जम्मू कश्मीर आए थे। महाराजा और महात्मा गांधी के बीच वार्ता का ब्योरा तो मौजूद नहीं है, लेकिन तत्कालीन राजनीतिक हालात और उसके बाद कश्मीर के घटनाक्रम में आए बदलाव के मद्देनजर माना जाता है कि बापू जम्मू कश्मीर के भारत में विलय को यकीनी बनाने आए थे। महात्मा गांधी अपने पूरे जीवनकाल में एक ही बार जम्मू कश्मीर आए। उनका यह दौरा करीब 10 दिन चला था। उनके इस दौर को लेकर बहुत कुछ कहा-सुना और लिखा गया। अलबत्ता, 1947 के तत्कालीन हालात, जम्मू कश्मीर में महाराजा के खिलाफ जारी आंदोलन और विलय पर संशय के

बीच यह दौरा अत्यंत अहम था।

चिनार के पेड़ के नीचे महाराजा से मिले थे बापू महाराजा हरि सिंह और महात्मा गांधी की मुलाकात के गवाह हैं पूर्व सदर-ए-रियासत डॉ. कर्ण सिंह। उनके मुताबिक महाराजा हरि सिंह और रानी तारा देवी के साथ महात्मा गांधी की मुलाकात एक अगस्त 1947 को गुलाब भवन (अब यह हेरिटेज होटल में बदल चुका है) के प्रांगण में चिनार के एक पेड़ के नीचे हुई थी, यह चिनार आज भी है। डॉ. कर्ण सिंह ने अपनी किताब में लिखा है, महात्मा गांधी के आगमन पर पूरे महल को बड़ी सादगी और करीने से सजाया गया था। गुलाब महल के सामने चिनार के नीचे ही उनके बैठने की व्यवस्था की गई थी। महात्मा गांधी को लेने के लिए महाराजा हरि सिंह खुद पोच तक गए। मां महारानी तारा देवी ने उनके लिए विशेष तौर पर बकरी का दूध और फल मंगवाए थे। उनकी महाराजा हरि सिंह के साथ करीब डेढ़ घंटे बैठक चली। अलबत्ता, दोनों के बीच बातचीत का ब्योरा डॉ. कर्ण सिंह ने नहीं दिया है। शेख अब्दुल्ला के परिवार से भी की थी मुलाकात : महात्मा गांधी श्रीनगर में टेकेदार सेठ किशोरी लाल के मकान में रुके थे। वहां आयोजित

प्रार्थना सभा में नेशनल कांफ्रेंस के संस्थापक शेख अब्दुल्ला (जो उस समय जेल में थे) की पत्नी बेगम अकबर जहां और बेटी खालिदा शाह भी शामिल हुई थीं। इसके बाद महात्मा गांधी उनसे मिलने सीरा स्थित उनके पैतृक निवास भी गए, जहां उन्होंने बेगम अकबर जहां से कुरान की कुछ आयतों को दोहराने को कहा था। उन्होंने बाद में महाराजा हरि सिंह से चर्चा कर जेल में बंद नेताओं को रिहा करने का आग्रह किया था। बापू ने भारत में शामिल होने की दी थी सलाह : जम्मू कश्मीर के वरिष्ठ पत्रकार स्व. वेद भसीन ने जम्मू विश्वविद्यालय में वर्ष 2003 में आयोजित सेमिनार एक्सपीरियंस ऑफ पार्टिएशन : जम्मू 1947, में कहा था कि जिन हालात में गांधी जी श्रीनगर पहुंचे और महाराजा से मिले, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी ने उन्हें भारत में शामिल होने की सलाह दी। यह बात अलग है कि महात्मा गांधी ने अपने दौरे को गैर-राजनीतिक करार देते हुए कहा था कि वह महाराजा के साथ कश्मीर यात्रा के पुराने वादे को निभाने गए थे। हालांकि कई ऐतिहासिक तथ्य पुष्ट करते हैं कि गांधी जी कश्मीर के विलय को यकीनी बनाए आए थे।



हम चाहे रहे था न रहे, हमारा देश और तिरंगा झंडा रहना चाहिए। और मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा तिरंगा रहेगा।



न्यूज गैलरी

मनी लांड्रिंग केस में शिवकुमार की हिरासत 15 तक बढ़ी

नई दिल्ली : मनी लांड्रिंग के मामले में आरोपित कर्नाटक के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता डीके शिवकुमार को न्यायिक हिरासत खत्म होने के बाद मंगलवार को अदालत में पेश किया गया। अदालत ने शिवकुमार की हिरासत 15 अक्टूबर तक बढ़ा दी है। साथ ही राजउ एवेन्यू की विशेष अदालत ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को शिवकुमार से तिहाड़ जेल में चार और पांच अक्टूबर को पूछताछ करने की मंजूरी दी है। दरअसल, प्रवर्तन निदेशालय ने अदालत में अजी देकर कहा कि जब शिवकुमार रिमांड पर थे, तो ज्यादा समय अस्पताल में ही भर्ती रहे। ऐसे में उनसे मनी लांड्रिंग मामले में पूछताछ पूरी नहीं हो सकी थी। इस पर अदालत ने ईडी को जेल में दो दिन पूछताछ करने की मंजूरी दे दी। उल्लेखनीय है कि शिवकुमार के खिलाफ आयकर विभाग के आरोपपत्र के बाद मनी लांड्रिंग का केस दर्ज किया गया था। जांच एजेंसी का दावा है कि शिवकुमार की करीब 800 करोड़ रुपये की संपत्ति का कोई हिसाब नहीं है।

(जास)

सेंट पीटर्सबर्ग के लिए भारतीयों को ई-वीजा देगा रूस

नई दिल्ली : रूस अपनी सांस्कृतिक राजधानी सेंट पीटर्सबर्ग और लैनिंग्राद क्षेत्र की यात्रा करने वाले भारतीय नागरिकों को ई-वीजा देगा और 2021 तक यह सुविधा देश के बाकी हिस्सों के लिए भी शुरू हो जाएगी। एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। यह सुविधा एक अक्टूबर से शुरू हो रही है। रूस पहुंचने की तिथि से कम से कम चार दिन पहले इलेक्ट्रॉनिक आवेदन फार्म फॉर्म के साथ डिजिटल फोटो अपलोड कर इस सुविधा का लाभ उठाना जा सकता है। भारतीय नागरिकों को व्यवसाय, मानवीय और पर्यटक एक अद्वितीय इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज के रूप में मिलेंगे जो जारी होने की तारीख से 30 दिनों के लिए वैध होगा। भारत में रूस के एक वरिष्ठ अधिकारी आद्रे वी फेदोरोव ने कहा, ‘हम रूस को खोलना चाहते हैं, प्रावधानों को उदार बनाना चाहते हैं ताकि अधिक संख्या में लोग जा सकें और हम अपने इतिहास तथा संस्कृति को दुनिया के सामने प्रदर्शित करना चाहते हैं। हम 2021 तक रूस के बाकी हिस्सों के लिए भी इस ई-वीजा सुविधा का विस्तार करने के बारे में सोच रहे हैं।’

(प्रेट्र)

जेल में घर के खाने के लिए चिंदबरम ने दायर की अर्जी

नई दिल्ली : पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री और वरिष्ठ कांग्रेसी नेता पी. चिंदबरम ने राजउ एवेन्यू की विशेष अदालत में अजी दायर कर घर के खाने की मांग की है। अदालत ने चिंदबरम की इस अर्जी पर सुनवाई के लिए तीन अक्टूबर की तिथि मुकर की है। चिंदबरम आइएनएक्स मीडिया घोटाले के आरोप में चिंदबरम को गत 21 अगस्त को सीबीआइ ने गिरफ्तार किया था। कई दिन रिमांड पर रखने के बावजूद उन्हें तिहाड़ जेल न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था। चिंदबरम की नियमित जमानत याचिका भी सोमवार को हाई कोर्ट से खारिज हो चुकी है। अब तीन अक्टूबर को ही उनकी न्यायिक हिरासत खत्म हो रही है और उसी दिन घर के खाने के लिए दायर की गई अर्जी पर भी सुनवाई होगी।

(जास)

कह के रहेंगे

माधव जोशी



विश्व विख्यात एएसआइ को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण : हिंदू पक्ष

माला दीक्षित, नई दिल्ली

अयोध्या राम जन्मभूमि पर मालिका हक का दावा कर रहे भगवान रामलला के वकील सीएस वैद्यनाथन ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में कहा, मुस्लिम पक्ष का एएसआइ (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण) को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण है। मुस्लिम पक्ष ने एएसआइ और उसकी रिपोर्ट पर सवाल उठाए हैं जबकि एएसआइ ने हाई कोर्ट के आदेश पर कोर्ट निरीक्षक की नियरानी में विवादित स्थल की खोदाई कर रिपोर्ट दी है। एएसआइ की रिपोर्ट वैज्ञानिक साक्ष्य है। वैद्यनाथन ने कहा, एएसआ रिपोर्ट में कहा गया है कि विवादित स्थल के नीचे विशाल संरचना थी जो कि उत्तर भारत के मंदिर से मेल खाती है। एएसआइ रिपोर्ट रामलला के दावे का समर्थन करती है जिनकी अभीूल में कहा गया है कि बाबर ने जन्मस्थान पर मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाई थी। उन्होंने कहा, एएसआइ दुनिया में जानी-मानी संस्था है। वह कंबोडिया आदि देशों में अपनी विशेषज्ञता के लिए जानी

स्वास्थ्य ही नहीं, रोजगार का भी बड़ा माध्यम बनेगा आयुष्मान

दावा ▶ अगले पांच–सात साल में 11 लाख युवाओं को मिलेगा रोजगार

केंद्रीय योजना का एक वर्ष पूरा होने पर दो दिन के आरोग्य मंथन को किया संबोधित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

गरीबों के लिए मुफ्त पांच लाख रुपये तक के इलाज में आयुष्मान भारत की भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इससे न सिर्फ मुफ्त इलाज की सुविधा उपलब्ध हो रही है, बल्कि छोटे-छोटे शहरों में बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाओं का चंचा भी तैयार हो रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आने वाले कुछ साल में आयुष्मान भारत रेलवे के बाद सबसे अधिक रोजगार मुहैया कराने वाला क्षेत्र बन जाएगा। उन्होंने कहा कि पूरी योजना में गड़बड़ी के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहने दो जाएगी।

योजना का एक साल पूरा होने पर दो दिन के मंथन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने आयुष्मान भारत को ‘न्यू इंडिया के क्रांतिकारी कदमों में से एक’ बताया। उन्होंने कहा कि गरीबों को बेहतर और सस्ती स्वास्थ्य सेवाओं के प्रयास पहले भी होते रहे हैं, लेकिन उनसे तो गरीबों को कोई लाभ मिल सका और न ही

सड़क परिवहन मंत्रालय को एनजीटी ने फटकार लगाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय को फटकार लगाई है। मंत्रालय राष्ट्रीय राजधानी में सड़क की क्षमता के अनुपात में कितने वाहनों को अनुमति दी जा सकती है इसकी रिपोर्ट सौंपने में विफल रहा। एनजीटी के अध्यक्ष आदर्श कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यह आपराधिक है। पीठ ने सड़क परिवहन मंत्रालय के सचिव को रिपोर्ट दखिल करने का अंतिम मौका दिया है।

हाल के आदेश में पीठ ने कहा है, ‘यह साफ नहीं है कि परिवहन मंत्रालय इस ट्रिब्यूनल के आदेश के बावजूद रिपोर्ट दखिल करने में क्यों विफल रहा। यह उल्लंघन आपराधिक है। इसलिए ऐसे उल्लंघन पर दंडात्मक कदम उठाने की जरूरत हो सकती है लेकिन ऐसा करने से पहले पहले हम परिवहन मंत्रालय के सचिव को आदेश का पालन करने और एक महीने के भीतर ई-मेल से रिपोर्ट सौंपने का अंतिम मौका दे रहे हैं। इसमें विफल रहने पर कानून का शासन लागू करने के लिए मंत्रालय के सचिव के खिलाफ कानूनी तौर पर दंडात्मक कदम उठाना जाएगा।’

ट्रिब्यूनल ने उल्लेख किया कि पिछले वर्ष अक्टूबर में उसने मंत्रालय को अध्ययन करने का आदेश दिया था। इस मामले पर 29 अप्रैल 2019 को विचार किया जाना था। लेकिन कोई रिपोर्ट नहीं सौंपी गई और सुनवाई तीन

23.6 फीसद बच्चे झारखंड में प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाते, बिहार में यह आंकड़ा 24 फीसद है। नीति आयोग की ओर से जारी रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

जाती है। एएसआइ ने कोर्ट की नियरानी में और दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में खोदाई की। ऐसे में वह किसी भी तरह का पक्षपात और गलती नहीं कर सकती। एएसआइ ने रिपोर्ट के साथ सारे रजिस्टर और 25 वीडियो कैसेट कोर्ट में जमा किए थे जिसमें खोदाई का पूरा ब्योग था। हाई कोर्ट ने बारीकी से उसे देखा है। एएसआइ की बुराई करने से सभ्यता के इतिहास पर संदेह पैदा होगा। मुस्लिम पक्ष एएसआइ की तुलना हस्तलेख विशेषज्ञ से करके उसके साक्ष्य पर संदेह पैदा रहा है जो ठीक नहीं है।

तो क्या बाबर ने इंदगाह तोड़कर मस्जिद बनाई थी : वैद्यनाथन ने कहा कि मुस्लिम पक्ष ने पहले कभी नहीं कहा कि विवादित स्थल के नीचे इंदगाह थी। मुस्लिम पक्ष शुरू से कहता आया है कि बाबर ने खाली जमीन पर मस्जिद बनाई थी। जब एएसआइ ने खोदाई की और वहां नीचे विशाल संरचना, दीवारें और खंखों के आधार पाए जाने की रिपोर्ट दुनिया में जानी-मानी संस्था है। वह कंबोडिया आदि देशों में अपनी विशेषज्ञता के लिए जानी

स्वास्थ्य ही नहीं, रोजगार का भी बड़ा माध्यम बनेगा आयुष्मान

दावा ▶ अगले पांच–सात साल में 11 लाख युवाओं को मिलेगा रोजगार

केंद्रीय योजना का एक वर्ष पूरा होने पर दो दिन के आरोग्य मंथन को किया संबोधित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

गरीबों के लिए मुफ्त पांच लाख रुपये तक के इलाज में आयुष्मान भारत की भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इससे न सिर्फ मुफ्त इलाज की सुविधा उपलब्ध हो रही है, बल्कि छोटे-छोटे शहरों में बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाओं का चंचा भी तैयार हो रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आने वाले कुछ साल में आयुष्मान भारत रेलवे के बाद सबसे अधिक रोजगार मुहैया कराने वाला क्षेत्र बन जाएगा। उन्होंने कहा कि पूरी योजना में गड़बड़ी के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहने दो जाएगी।

नई दिल्ली में मंगलवार को आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की पहली वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम ‘आरोग्य मंथन ’ को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

प्रेट्र

स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार में कोई सहजता मिली। वहीं, आयुष्मान भारत इन दोनों उद्देश्यों में सफल रहा है। आयुष्मान भारत के बन रहे हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर शुरू में ही गैंगों को पहचान कर उन्हें रोकने में मदद कर रहे हैं, तो प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना गरीबों को गंभीर बीमारियों के मुफ्त इलाज की सुविधा उपलब्ध कर रही है। गरीबों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिलने से इसकी मांग तेजी से बढ़ी है और उसकी पूर्ति के लिए छोटे-छोटे शहरों में बेहतरीन अस्पताल खुलने लगे हैं। आयुष्मान भारत के तहत स्वास्थ्य

सेवाओं की मांग को देखते हुए अगले पांच-सात साल में इसमें 11 लाख युवाओं को रोजगार मिलने की उम्मीद है, जो देश में रेलवे के बाद सबसे अधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक साल में आयुष्मान भारत में हमने बहुत कुछ सीखा है और इसका उपयोग आगे उस योजना को ज्यादा कारगर बनाने में होगा। जन आरोग्य योजना के लिए नए परिष्कृत आइट्री प्लेटफार्म की तारीफ करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके तहत हर व्यक्ति के स्वास्थ्य का डाटा जुटाने और उसे स्वास्थ्य के दूसरे प्लेटफार्म से जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि छोटे से वेलनेस सेंटर में मरीज की जांच का डाटा भी आइट्री प्लेटफार्म पर सुरक्षित रहना चाहिए, ताकि बड़े से बड़े अस्पताल में इलाज के दौरान डॉक्टर उस मरीज के पुर्णने डाटा को आसानी से देख सकें। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की कमी को दूर करने के लिए सरकार ने अहम कदम उठाए हैं। 75 पार मेट्रोपॉलिटन कॉलेज खोलने और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग का गठन का फैसला इसीलिए किया गया है। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर पीएमजेएवाई एप और साल एक, आयुष्मान अनेक शीर्षक से डाक टिकट भी जारी किया।

दुरुपयोग की शीर्ष कोर्ट ने बताया मानवीय गलती

प्रथम पृष्ठ से आगे

राष्ट्रीय राजधानी में सड़क की क्षमता के अनुपात में वाहनों की संख्या पर रिपोर्ट सौंपने में विफल रहा मंत्रालय

बार स्थगित की गई। याचिका दायर करने वाले परिवहन मंत्रालय के सचिव को कागजात का पूरा सेंट सौंप सकते हैं और सेवा का शपथपत्र एक सप्ताह के भीतर दखिल कर सकते हैं। इसके बाद एनजीटी ने मामले की सुनवाई नौ दिसंबर तय कर दी।

वाहनों के उत्सर्जन से हवा की गुणवत्ता पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को देखते हुए एनजीटी ने परिवहन मंत्रालय को अध्ययन करने का निर्देश दिया था। मंत्रालय को राष्ट्रीय राजधानी में सड़क की क्षमता के अनुपात में कितनी संख्या में वाहनों को अनुमति दी जा सकती है इसका अध्ययन करना था। एनजीटी ने कहा था कि रिकानूनी पार्किंग और अतिक्रमण सिर्फ दिल्ली में गंभीर समस्या नहीं है, बल्कि सभी बड़े शहरों की समस्या है।

पीठ ने कहा था, ‘एक शहर में सड़क की क्षमता के अनुपात में कितनी संख्या में वाहनों को अनुमति दी जा सकती है, यह योजना का महत्वपूर्ण मुद्दा है। पर्यावरण के वृहत्तर हित में इसपर एक नीति की जरूरत है। खास तौर से ऐसे शहरों या क्षेत्रों के लिए जहां हवा की गुणवत्ता नियमों के अनुसार स्थिर नहीं रहती।’

शीर्ष कोर्ट ने एससी-एसटी एकट के दुरुपयोग को मानवीय गलती बताया और कहा कि इसे किसी जाति से जोड़ना ठीक नहीं है। क्या सामान्य वर्ग से जुड़ा व्यक्ति झूठी रिपोर्ट नहीं दर्ज करता? इस आधार पर किसी को संवैधानिक अधिकारों से वंचित करना संविधान की मूल भावना के खिलाफ है।

सीवर चैंबरस में यूं मरने के लिए नहीं छोड़ सकते : इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने सीवर की सफाई के दौरान होने वाले एससी-एसटी वर्ग के लोगों की मौत पर भी चिंता जताई। पीठ ने कहा, ‘वे खेतों में बंधुआ या जबरन मजदूरी करते हैं और कोशिशों के बाद भी उसे खत्म करने का निर्देश दिया था। कुछ क्षेत्रों में महिलाओं के साथ गरिमापूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जाता और उनका कई तरह से यौन शोषण किया जाता है। चैंबरस में हम सीवर वर्कर्स को जहरीली गैसों से मरते हुए देखते हैं। वे मौत के फंदे जैसे हैं। सीवर चैंबरस में घुसने के लिए हम मास्क और ऑक्सीजन सिलेंडर्स भी उपलब्ध नहीं कर पाए हैं। हम उन्हें यूं मरने को लिए नहीं छोड़ सकते और संबोधित अधिकारी या मशीनी अपनी आपराधिक जिम्मेदारी से नहीं बच सकते। उनके नागरिक अधिकारों के मामले में अभी भी उनके साथ समाज में भेदभाव किया जा रहा है और वे मानवीय गरिमा के साथ जीवन नहीं जी सकते।’

नीति आयोग की स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स रिपोर्ट से सामने आई जानकारी

देश के पूर्वी राज्य बिहार और झारखंड में आगे की कक्षाओं में भी यह रफ्तार कायम



प्रतीकात्मक

तो देश के बाकी सभी बड़े राज्यों में यह रफ्तार दस फीसद या उससे कम है। दक्षिण भारतीय राज्य केरल की स्थिति इस मामले में सबसे अच्छी है, जहां शत-प्रतिशत बच्चे ग्राइमरी से अपर-ग्राइमरी में पहुंचे। यानि एक भी बच्चे ने स्कूल नहीं छोड़ा।

नीति आयोग का ओर से

अयोध्या की पुकार

सुनवाई का 35वां दिन

मुस्लिम पक्ष की आपत्तियों का रामलला के वकील ने दिया जवाब

नीचे ईदगाह थी। जो 11वीं या 12वीं शताब्दी में सुल्तान काल में बनाई गई थी। इस बारे में न तो इनके मुकदमे में जिक्र था और न इनके किसी गवाह ने कुछ कहा। मुस्लिमों ने कभी भी 1528 से पहले जमीन पर दावा नहीं किया। 1528 में बाबर ने वहां मस्जिद बनवाई थी। वैद्यनाथन ने कहा कि तो क्या बाबर ने इंदगाह तोड़कर मस्जिद बनवाई थी। विदेशी यात्रियों का वर्णन देखा जाए तो अयोध्या में रामकोट के इस क्षेत्र में बहुत बसावट थी जबकि ईदगाह बरती से दूर बनती है। वैद्यनाथन ने कहा, मुस्लिम पक्ष ने बार बार कोर्ट में 1934, 1949 और 1992 की घटनाओं का जिक्र किया है। बहस के दौरान

ऐसी बातों की जिससे सौहार्द बिगड़ सकता है जबकि हिंदू पक्ष की ओर से कभी ऐसी बातें नहीं हुई। इस पर राजीव धवन ने विरोध करते हुए कहा कि उन्होंने कभी भी सौहार्द बिगाड़ने वाली दलील नहीं दी, उन्होंने इन घटनाओं का जिक्र इन्हें गैरकानूनी बताते हुए दिया था।

दोनों पक्षों के बीच हुई गर्मागर्मी, कोर्ट हुआ नाराज : एएसआइ रिपोर्ट पर बहस के दौरान दोनों पक्षों के बीच कई बार गर्मागर्मी हुई। जब वैद्यनाथन ने कोर्ट को बताया कि एएसआइ रिपोर्ट में सिर्फ एक दीवार मिलने की बात नहीं है जिसे मुस्लिम पक्ष ईदगाह बता रहा है बल्कि चारों ओर दीवार होने की बात कही गई है जो वहां हॉल या बड़ा कमरा होने की बात साबित करती है। तभी राजीव धवन और मीनाक्षी अरोड़ा ने वैद्यनाथन की दलील का विरोध करते हुए कहा, खोदाई में चारों ओर दीवारें नहीं मिली हैं जैसा कि वैद्यनाथन बता रहे हैं। दोनों पक्षों ने कोर्ट को एएसआइ नक्शों को समझाने की कोशिश की, इस बीच दोनों के वकील तेज आवाज में एक दूसरे के दावे

ममता का शाह पर पलटवार

प्रथम पृष्ठ से आगे

ममता बनर्जी ने शाह के बयान पर कहा कि ‘बंगाल अतिथि–सत्कार के लिए जाना जाता है। सुबे में लोग अपने–अपने धर्म के अनुसार रहते हैं, इसके बावजूद वे दुर्गापूजा जैसा त्योहार मनाने के लिए एकत्र होते हैं, जो विभिन्न धर्मों के लोगों को एकजुट करता है। हमारे राज्य में हर किसी का स्वागत है। यहां आतिथ्य–सत्कार का आनंद लीजिए, लेकिन कृपया बांटने की राजनीति नहीं कीजिए क्योंकि यह बंगाल में काम नहीं करेगा। तुणमूल नेता व बंगाल के वित्त मंत्री अमित मित्रा ने कहा, शाह का बयान दुर्गापूजा के उत्सवी माहौल में आतंक फैलाने वाला है। शाह कह रहे हैं कि हिंदू, सिख, बौद्ध व जैन शरणार्थियों को देश की नागरिकता दी जाएगी, लेकिन भारत के संविधान के तहत धर्म के आधार पर विभाजन कैसे किया जा सकता है?।

तृणमूल छोड़ भाजपा में शामिल हुए सव्यसाची : तृणमूल कांग्रेस के कटकाद्वार नेता सव्यसाची दाता शाह की मौजूदगी में भाजपा में शामिल हो गए। दाता ने कहा– ‘मेरे लिए देश और उसका हित व्यक्तित्व व किसी पार्टी के हित से बड़ा है। मोदी के नेतृत्व में भारत ने नई ऊंचाइयां हासिल की हैं।

बंगाल को पाक बनाने का रवा जा रहा षड्यंत्र : सव्यसाची ने सतारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का नाम न लेते हुए उन पर बंगाल को पाकिस्तान बनाने का षड्यंत्र रखने का गंभीर आरोप लगाया। (कहा, राज्य में किसी भी घुसपैठियों के लिए कोई स्थान नहीं है। दाता ने अमित शाह से अविलंब बंगाल में एनएससी लागू करने की अपील की।

संपर्क और संवाद अब भी भाजपा का प्रमुख हथियार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

मामला सदस्यों का हो या फिर विचारधारा के विस्तार का, अगर भाजपा दूसरे दलों से आगे है तो इसका उदाहरण इसमें देखा जा सकता है कि महज एक महीने में पार्टी ने पांच लाख नामचीन लोगों से संपर्क कर उन्हें अपनी विचारधारा समझाने की कोशिश की है। इनमें पूर्व गवर्नर जगमोहन से लेकर मिल्खा सिंह जैसे कई ऐसे लोग शामिल हैं जिनके बड़े फालोअर्स हैं।

कुछ दिनों पहले ही भाजपा का सदस्यता अभियान खत्म हुआ था। लगभग 18 करोड़ सदस्यों के साथ भाजपा सदस्यों संख्या अधिकतर देशों से भी अधिक हो गई थी। भाजपा का दावा है कि अब केवल आठ देशों में ही भाजपा की सदस्य संख्या से अधिक जनसंख्या है। वहीं यह कोशिश जारी है कि भाजपा की विचारधारा से नामचीन जुड़ें। दो सितंबर से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जगमोहन के साथ संपर्क अभियान की शुरुआत की और 30 सितंबर तक भाजपा नेताओं ने ऐसे पांच लाख लोगों से संपर्क किया और भाजपा के कामकाज के बारे में बताया।

केंद्रीय वित्तोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इसी बीच अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटए जाने के जारी किए गए स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स रिपोर्ट के मुताबिक, स्कूलों में छठी से आठवीं तक पहुंचने के बीच भी बच्चों के स्कूल छोड़ने की रफ्तार गुजर रही है। झारखंड, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात, जम्मू-कश्मीर और छत्तीसगढ़ जैसे छह ऐसे राज्य हैं, जहां दस फीसद से ज्यादा बच्चे छठी से आठवीं तक आते–आते स्कूल छोड़ देते हैं। इनमें सबसे खराब स्थिति झारखंड की है, जहां ऐसे बच्चों की संख्या 30 फीसद से अधिक है, जबकि बिहार में यह संख्या 26 फीसद से अधिक है।

हालांकि इनमें उत्तर प्रदेश ने अपनी स्थिति बेहतर की है। उसके यहां सिर्फ पांच फीसद ही ऐसे बच्चे मिले हैं, जो छठी से आठवीं तक स्कूल छोड़ दिया। खास बात यह है कि आयोग ने यह रिपोर्ट वर्ष 2016-17 के आंकड़ों को आधार बनाकर तैयार की है। हालांकि इस रिपोर्ट के संपूर्ण प्रदर्शन में उत्तर प्रदेश सबसे फिसट्टी है।

राज–नीति 3

विश्व विख्यात एएसआइ को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण : हिंदू पक्ष

का विरोध करने लगे। अंत में प्रधान न्यायाधीश ने नाराजगी जताते हुए कहा, वह शुरू से एक पक्ष की बहस के दौरान दूसरे पक्ष के दखल देने से मना कर रहे हैं, लेकिन किसी को यह बात समझ क्यों नहीं आती। इस तरह सुनवाई नहीं चल सकती। इसके बाद दोनों पक्षों के वकील चुप हो गए और राजीव धवन ने कोर्ट से माफी मांगी। इसके बाद वैद्यनाथन ने फिर बहस शुरू की और बताया कि वह जिन दीवारों की बात कर रहे हैं वे एएसआइ की रिपोर्ट में कहीं गई हैं, वह अपनी ओर से कोई अनुमान नहीं लगा रहे। धवन इससे पहले भी कई बार हिंदू पक्ष की दलीलों पर आपत्ति जता चुके थे। परासरन ने तो उनके रवैये पर एतराज जताते हुए कहा था कि वह ठीक नहीं है कि वह हर बात पर उन्हें टोक रहे हैं।

क्या जन्मस्थान का ज्योतिष से कोई संबंध है : सुनवाई के दौरान जस्टिस बोबडे ने रामलला के वकील के. परासरन से कहा, वैसे उन्हें नहीं मालूम, लेकिन ऐसे ही जानना चाहते हैं कि क्या जन्मस्थान का ज्योतिष से कोई संबंध है। परासरन इस बारे में कोई जवाब देते उससे

पाक को कभी भी काली सूची में डाल सकता है एफएटीएफ

▶ राजनाथ ने इमरान पर किया तंज, कहा– अपने लिए विमान का प्रबंध भी नहीं कर पाए पाकिस्तानी पीएम

▶ एफएटीएफ की अगली बैठक पेरिस में 13 से 18 अक्टूबर तक होगी है

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म किए जाने के बाद से पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान की ओर से मिल रही परमाणु हमले की धमकियों के बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान पर तीखा हमला किया है। राजनाथ ने पाकिस्तान को आड़े हाथ लेते हुए उसे वित्तीय कुप्रबंधन का जीवंत उदाहरण करग दिया। रक्षा मंत्री ने कहा कि मनी लांड्रिंग और आतंकी फंडिंग पर नजर रखने वाली वैश्विक संस्था फाइनेशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) कभी भी पाकिस्तान को काली सूची में डाल सकती है।

अगस्त में एफएटीएफ के एशिया प्रशांत समूह ने पाकिस्तान को आतंक की काली सूची में डालने योग्य माना था क्योंकि वह भारत में हुए कई हमलों के लिए जिम्मेदार आतंकी समूहों तक धन पहुंचने से रोकने में विफल रहा था। एफएटीएफ की अगली बैठक 13 से 18 अक्टूबर के बीच पेरिस में होने जा

धर्मेन्द्र प्रधान



बारे में भी भाजपा ने 34 बड़े शहरों और लगभग 500 अन्य स्थानों पर जनजागरण कार्यक्रम किया और पाया कि पूरा देश सरकार के इस कदम से सहमत ही नहीं बल्कि खुश है। इस जनजागरण कार्यक्रम में भी शाह व कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत भाजपा के कई मंत्रियों, सांसदों, विधायकों ने हिस्सा लिया था। प्रधान ने कि इस विस्तार के बावजूद भाजपा अध्यक्ष शाह लगातार कहते रहे हैं कि अभी भाजपा का स्वर्णिम कार्यकाल नहीं आया है वह प्रेरित करते रहे हैं कि हर राज्य में भाजपा को सत्ता में पहुंचना है तो संवाद और संपर्क ही माध्यम बनेगा।

जस्टिस गर्वाई ने नवलखा की याचिका पर सुनवाई से खुद को अलग किया

नई दिल्ली, प्रेट्र : सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बीआर गर्वाई ने मंगलवार को नवसल समर्थक गौतम नवलखा की अपील पर सुनवाई से खुद को अलग कर लिया। नवलखा ने महाराष्ट्र के पुणे जिले के भीमा कोरेगांव हिंसा मामले में दर्ज रिपोर्ट रद्द करने से इन्कार करने संबंधी बांबे हाई कोर्ट के आदेश को, शीर्ष अदालत में चुनौती दी है। उल्लेखीय है कि सोमवार को देश के मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने भी मामले की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया था।

जस्टिस एनवी रमना, जस्टिस आरएस रेड्डी व जस्टिस बीआर गर्वाई की पीठ के समक्ष नवसल समर्थक गौतम नवलखा की अपील सुनवाई के लिए आई। इस दौरान जस्टिस गर्वाई ने मामले की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया। अब यह तीन अक्टूबर को किसी अन्य पीठ के समक्ष सुचीबद्ध होगा। 13 सितंबर को हाई कोर्ट ने एफआइआर रद्द करने से इन्कार करते हुए कहा था कि इस मामले में पहली नजर में ठोस सामग्री है।

पहले धवन खड़े हो गए और उन्होंने कोर्ट से कहा कि कैसी ज्योतिष। एक ज्योतिष सूर्य आधारित होती है और एक चंद्रमा आधारित। यहाँ हम ज्योतिष पर बात नहीं कर रहे। अगर ज्योतिष पर बात होगी तो उसके मुताबिक तो राम जन्मस्थान और समय बताया गया होता जो कि नहीं हैं। धवन ने अपने संबंध में कुछ हल्की फुल्की टिप्पणियां भी कीं। बाद में परासरन ने कहा कि वाल्मीकि रामायण में राम की जन्म कुंडली दी गई है। जिसमें जन्म के अलावा उनका विवाह आदि भी बताया गया है। हाई कोर्ट में सुनवाई के दौरान मुस्लिम पक्ष की ओर से जिह्म में राम जन्म के संबंध में लेबर रूम तक की चर्चा किए जान को भी हिंदू पक्ष ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

जन्मस्थान न्यायिक व्यक्ति माना जाएगा : परासरन ने कहा कि जन्मस्थान न्यायिक व्यक्ति माना जाएगा। वहां लोगों की आस्था है लोग मानते हैं कि भगवान राम वहां प्रकट हुए थे इसलिए स्थान पवित्र है। स्थान स्वयं में देवता हो सकता है उसके लिए किसी आकार, प्रकार या मूर्ति होना जरूरी नहीं।

पाक को कभी भी काली सूची में डाल सकता है एफएटीएफ

▶ राजनाथ ने इमरान पर किया तंज, कहा– अपने लिए विमान का प्रबंध भी नहीं कर पाए पाकिस्तानी पीएम

▶ एफएटीएफ की अगली बैठक पेरिस में 13 से 18 अक्टूबर तक होगी है

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

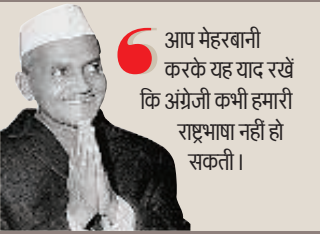
रही है। वैश्विक संस्था को इस बैठक में तय होगा कि पाकिस्तान इसकी ग्रे सूची में बना रहेगा या फिर और नीचे गिरकर काली सूची में शामिल हो जाएगा जिसकी संभावना ज्यादा है।

राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान पर तंज कसते हुए आगे कहा कि पाकिस्तान में वित्तीय प्रगति के बिना अत्यधिक सैन्यीकरण और गलत नीतियों के चलते ऐसे हालात बन गए हैं कि वहां के प्रधानमंत्री इमरान खान वैश्विक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए एक विमान का बंदोबस्त तक नहीं कर पाए।

रक्षा मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह का यह बयान उस पृष्ठभूमि में आया है जब संयुक्त राष्ट्र महासभा के 74वें सत्र में हिस्सा लेकर इस्लामाबाद के लिए निकले इमरान खान और उनके प्रतिनिधिमंडल को मजबूरी में न्यूयॉर्क लौटना पड़ा था क्योंकि सऊदी सरकार की ओर से उन्हें दिए गए विशेष जेट विमान में तकनीकी खामी आ गई थी।

भारत से पाकिस्तान की तुलना पर उठाए सवाल

प्रथम पृष्ठ से आगे



आप मेहरबानी करके यह याद रखें कि अंग्रेजी कभी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती ।



स्वतंत्रता एक जन्म की भांति है । जब तक हम पूर्णतः स्वतंत्र नहीं हो जाते तब तक हम परतंत्र ही रहेंगे ।

महाराष्ट्र चुनाव में मुंबई से अब तक जब्त किए गए चार करोड़ रुपये

मुंबई, प्रे़ट्र : महाराष्ट्र विचुन चुनाव की घोषणा के बाद से पिछले 15 दिनों में आयकर विभाग ने अकेले मुंबई से चार करोड़ रुपये की नकदी जम्बू की है। विभाग की जांच इकाई के महानिदेशक नितिन गुप्ता ने बताया कि निष्पक्ष चुनाव कयने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाया जा रहा है। इसी तरह का अभियान मई में लोकसभा चुनावों के दौरान चलाया गया था। उस समय वित्तीय राजधानी मुंबई से 17 करोड़ रुपये और पूरे महाराष्ट्र से 28 करोड़ रुपये जब्त किए गए थे। उन्होंने बताया कि मुंबई के लिए छह त्वरित प्रतिक्रिया दल बनाए गए हैं।

महाराष्ट्र में भाजपा की पहली सूची से कई दिग्गजों के नाम गायब

एलान ► मंत्रिमंडल का हिस्सा रहे एकनाथ खडसे, विनोद तावड़े, प्रकाश मेहता व राजपुरोहित का नाम नहीं

शिवसेना ने दो दिन पहले से नामांकन के लिए जरूरी एबी फॉर्म देने कर दिए थे शुरु

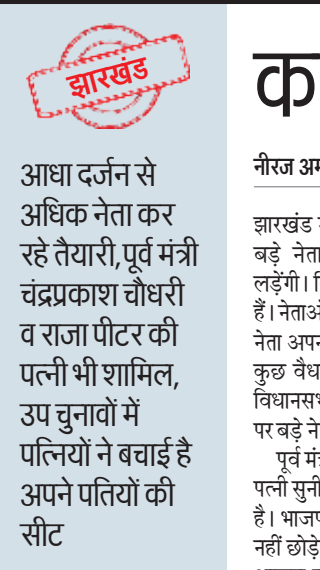
राज्य ब्यूरो, मुंबई

भाजपा ने महाराष्ट्र विधानसभा के लिए मंगलवार को अपने 125 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी। इसमें एकनाथ खडसे, प्रकाश मेहता और विनोद तावड़े जैसे दिग्गजों के नाम गायब हैं। बता दें कि भाजपा ने काफी प्रतीक्षा के बाद सोमवार को शिवसेना एवं चार अन्य साथी दलों के साथ अपने गठबंधन की घोषणा की थी, लेकिन सीटों के औपचारिक बंटवारे का कोई बयान अभी तक किसी साथी दल या गठबंधन की तरफ से सामने नहीं आया है। इसके बावजूद शिवसेना ने दो दिन पहले से नामांकन के लिए जरूरी एबी फॉर्म देने शुरू कर दिए थे।

भाजपा ने मंगलवार को प्रत्याशियों की जो पहली सूची जारी की है, उसमें आश्चर्यजनक रूप से देवेंद्र फडनवीस के मंत्रिमंडल में शामिल रह चुके प्रकाश मेहता, विनोद तावड़े, राजपुरोहित और एकनाथ खडसे जैसे दिग्गजों का नाम नहीं है। इनमें तावड़े और खडसे तो पांच साल पहले फडनवीस के साथ मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार भी माने जा रहे थे। खडसे गोपीनाथ मुंडे के करीबी और पिछड़े वर्ग के नेता हैं। उनके बंगले पर दाऊद के कराची स्थित घर से फोन आने के आरोपों के बाद उन्हें मंत्रिमंडल

कांग्रेस छोड़ जजपा के हुए पूर्व मंत्री सतपाल और पूर्व सांसद ईश्वर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : अपनी पार्टी के टिकट से वंचित रहने पर नेता दूसरे दलों में अपना राजनीतिक भविष्य तलाशने में जरा भी वक्त नहीं लगा रहे हैं। दरअसल, हरियाणा में चार तारीख तक ही नामांकन पत्र दाखिल किए जा सकते हैं। इसलिए जिन नेताओं को अपने दल से टिकट की आस नहीं है वे अपने लिए सुश्रुति दुर्ग ढूंढ़ रहे हैं। भाजपा ने अपने 78 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है और इसके भी कई नेता निर्दलीय या दूसरे दलों से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। वहीं, कांग्रेस के टिकट घोषित होने से पहले ही दो बड़े नेता मंगलवार को जननायक जनता पार्टी (जजपा) में शामिल हो गए।



आधा दर्जन से अधिक नेता कर रहे तैयारी,पूर्व मंत्री चंद्रप्रकाश चौधरी व राजा पीटर की पत्नी भी शामिल, उप चुनावों में पत्नियां ने बचाई है अपने पतियों की सीट

मनोहर ने पूरे देश को कराया हरियाणा की भक्ति व शक्ति का परिचय : योगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की मौजूदगी में हरियाणा के सीएम ने भरा नामांकन पत्र

जागरण संवाददाता, करनाल

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आजादी के बाद हरियाणा अपनी पहचान को तरस गया था। उस पहचान को पूरे देश और विश्व में कायम करने का काम सीएम मनोहर लाल ने किया। उन्होंने हरियाणा की शक्ति और भक्ति का परिचय देश व दुनिया को कराया।

सहजता-सरलता और कर्मठता के साथ हरियाणा को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। योगी आदित्यनाथ मंगलवार को सेक्टर 12 में सीएम मनोहर लाल के करनाल विधानसभा से नामांकन से पहले जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इसके बाद सीएम ने योगी की मौजूदगी में ही नामांकन किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि परदर्शिता और योग्यता के आधार पर नौकरी देने के मामले में हरियाणा पूरे देश में उदाहरण बना। इसे देखने के लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश से अधिकारियों की टीम यहां भेजी थी। पहले हरियाणा में योग्य युवाओं का हक मारा जाता था। किसान परेशान थे और उद्योगपति निराश थे। यहां निवेश करने से बड़े उद्योगपति कतराते थे, लेकिन मनोहर लाल ने हरियाणा में राजनीति की कुसंस्कृति को बदलकर यह साबित कर दिया कि मुख्यमंत्री कैसा होना चाहिए।



हरियाणा की करनाल विधानसभा सीट से नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले एक रैली के दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ सीएम मनोहर लाल ।

मोदी के नेतृत्व में अमेरिका ने किया भारत की शक्ति का अहसास : योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में अमेरिका ने भारत की शक्ति का अहसास किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह ने अनुच्छेद 370 समाप्त करके फिर साबित कर दिया कि जो कहते हैं, वह करके दिखाते हैं। **कांग्रेस के मंच से नहीं लगते भारत मां के जयकारे :** योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कांग्रेस के मंच से भारत मां की जय के नारे नहीं लगते। उन्होंने महर्षि अरविंद का जिक्र करते हुए कहा

कि उनसे किसी ने पूछा था कि सबसे बड़ा पुण्य क्या है और सबसे बड़ा पाप क्या है। इसके जवाब में उन्होंने कहा था कि देश के प्रति समर्पण सबसे बड़ा पुण्य है और देश से गद्दारी सबसे बड़ा पाप है।

कुछ काम रह गए थे, अब करके पूरा : सीएम मनोहर लाल ने कहा कि 2014 में भाजपा की सरकार बनने के बाद सही मायने में काम करने के लिए तीन साल मिले। इस दौरान भी बहुत तेजी से काम किया गया। उपलब्धियों की फेहरिस्त खासी लंबी है। बहुत से काम करने

सवा करोड़ की संपत्ति है मुख्यमंत्री मनोहर लाल की

जासं, करनाल : हरियाणा के सीएम मनोहर लाल ने मंगलवार को करनाल विधानसभा से नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन के दौरान दिए गए शपथपत्र में मुख्यमंत्री ने अपनी चल संपत्ति में 94 लाख 985 रुपये और अचल संपत्ति में 12 कनाल की जमीन दर्शाई है। इस जमीन की कीमत 30 लाख रुपये है। रोहतक के बनियानी गांव में एक मकान है। इसकी कीमत तीन लाख रुपये दर्शाई गई है। मुख्यमंत्री के कवरिंग प्रत्याशी के तौर पर भाजपा नेता बृज भूषण ने अपना नामांकन दाखिल किया है। उन्होंने अपनी चल संपत्ति तीन करोड़ 22 लाख 60 हजार 120 रुपये की दर्शाई है। इसमें एक फॉर्च्यूनर कार भी दर्शाई गई है। उन्होंने अचल संपत्ति के रूप में करनाल जिले के गांव सांभली में 3 करोड़ 20 लाख रुपये कीमत की आठ एकड़ जमीन दर्शायी है। उन्होंने दो करोड़ रुपये का रिहायशी मकान, 46 लाख रुपये का एक प्लॉट और करीब 1 करोड़ 78 लाख रुपये के ऋण दर्शाए हैं।

के बाद भी कुछ रह गए। अगली बार काम के लिए पूरे पांच मिलेंगे तो डबल स्पीड से काम किया जाएगा।

फड़नवीस को इस्तीफा देकर राजनीति छोड़नी चाहिए : राकांपा

मुंबई, प्रे़ट्र : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस के बारे में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद राकांपा ने कहा कि उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए और राजनीति छोड़ देनी चाहिए। राकांपा के मुख्य प्रवक्ता नवाब मलिक ने कहा कि फडनवीस को चुनाव लड़ने का कोई अधिकार नहीं है।

मलिक ने कहा, ‘हम इस निर्णय का स्वागत करते हैं। इससे साबित होता है कि मुख्यमंत्री नियमों का पालन नहीं करते हैं। अब, उनके पास राजनीति में बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं बचा है। उन्हें तत्काल इस्तीफा दे देना चाहिए और राजनीति छोड़ देनी चाहिए। उन्हें चुनाव लड़ने का कोई अधिकार नहीं है।’ राकांपा के एक अन्य प्रवक्ता महेश तापसे ने आरोप लगाया कि वह अपने खिलाफ लॉबित आपराधिक मामलों के बारे में तथ्यों को छुपाकर मतदाताओं से झूठ बोल रहे हैं। उच्च नैतिक मानकों को अपनाने का दावा करने वाली भाजपा को उनकी उम्मीदवारी को खारिज कर देना चाहिए।

हमारा सरोकार बहुत ही सीमित मुद्दे पर है : कोर्ट

► **प्रथम पृष्ठ से आगे**

शीर्ष कोर्ट ने कहा था कि उसका सरोकार बहुत ही सीमित मुद्दे पर है कि क्या पहली नजर में इस मामले में जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा 125ए आकर्षित होती है या नहीं। वह प्रावधान ‘गतित हलफनामा’ दाखिल करने की सजा के बारे में है और इसमें कहा गया है कि अगर कोई प्रत्याशी या उसका प्रस्तावक किसी लॉबित आपराधिक मामले के बारे में नामांकन पत्र में कोई भी जानकारी उपलब्ध कराने में विफल रहता है या इसे छुपाता है या गलत जानकारी देता है

प्रत्याशियों के चयन से दूर रहे राहुल गांधी

नई दिल्ली, एएनआइ : कांग्रेस नेता राहुल गांधी पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा बुलाई गई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में शामिल नहीं हुए। मंगलवार को पार्टी अध्यक्ष ने अपने आवास पर हरियाणा विधानसभा चुनाव के प्रत्याशियों का चयन करने के लिए बैठक बुलाई थी। कांग्रेस ने मंगलवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए 52 प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी। प्रत्याशियों में पूर्व मुख्यमंत्री वल्लभ भाटनगर, धीरज देसमुख, युवराज विधानसभा में राजग के 125 और संप्रग के 102 सदस्य हैं। बताते हैं कि हाल में बेली रोड का नाम नेहरू पथ करने के फैसले से भाजपा पहले से नतीशी कुमार से नागज चल रही है। मालूम हो कि 245 सदस्यीय राज्यसभा में फिलहाल भाजपा के 80 सदस्य हैं। अपने सहयोगी दलों के साथ उसकी कुल सदस्य संख्या 114 हो जाती है जो बहुमत से नौ कम है।

फीसद पुरुष मतदाता हैं महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में । यहां 4,67,37,841 पुरुष और 4,27,05,777 महिला मतदाता अगली सरकार के लिए मतदान करेंगे।

भाजपा में नाराजगी नहीं, रूठों को जल्द मना लेंगे : मनोहर

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

हरियाणा में टिकट वितरण के बाद बने माहौल से निपटने को भाजपा पूरी तरह तैयार है। जिन दावेदारों के टिकट पार्टी ने काटे हैं, उनके समर्थक अलग-अलग बैठकें कर पार्टी पर अपने नेता को टिकट देने का दबाव बना रहे हैं। पूरे दिन इन नेताओं की जोड़तोड़ के बीच मंगलवार को मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि पार्टी में किसी तरह के विपरीत हालात नहीं हैं और जल्द ही रूठों को मना लिया जाएगा।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने करनाल से नामांकन पत्र भरने के बाद कहा कि भाजपा राज्य में दोबारा सरकार बनाने जा रही है। हम कार्यकर्ताओं के दम पर 75 से अधिक विधानसभा सीटें जीतेंगे। हमने 75 पर का लक्ष्य निर्धारित किया है। अब वह फैसला जनता को लेना है कि वह हमारी सरकार के काम को देखते हुए हमें 75 पर रोकती है या फिर इससे अधिक सीटें दिलाती है।

बता दें कि भाजपा अभी तक 78 विधानसभा सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर चुकी है और बाकी बचे 12 उम्मीदवारों

बुधवार	2 अक्टूबर 2019
www.jagran.com	

की लिस्ट तीन अक्टूबर को आने की संभावना है। भाजपा ने फरीदाबाद से उद्योग मंत्री विपुल गोयल का टिकट काटकर पार्टी के कोषाध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता को दिया है। विपुल गोयल के समर्थकों ने मंगलवार को फरीदाबाद में अपनी नाराजगी जाहिर की।

किसी ने छोड़ी पार्टी, किसी ने निर्दलीय लड़ने का फैसला किया सफ़ीदों से टिकट मांग कर रहे आजाद विधायक जसवीर देसवाल ने भाजपा को अलविदा कह दिया, जबकि पृथला से टिकट नहीं मिलने पर पुराने भाजपाई वनपाल रावत के समर्थकों ने बैठक कर अपने नेता को टिकट देने की मांग की। गुह्ला से भाजपा के देवेंद्र हंस ने निर्दलीय लड़ने का फैसला लिया है। रादौर में टिकट कटने से पूर्व सीपीएस् एवं विधायक श्याम सिंह राणा के समर्थकों ने नाराजगी जताई।

गुजरात के विधानसभा उप चुनाव में त्रिकोणीय जंग के आसार

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद : गुजरात में छह सीट पर हो रहे उप चुनाव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के मैदान में आ जाने से सभी सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला होगा। कांग्रेस ने राकांपा के साथ गठबंधन से साफ इन्कार कर दिया था। उधर, भाजपा में टिकट के सबसे बड़े दावेदार माने जा रहे पूर्व मंत्री शंकर भाई चौधरी को रेंस से बाहर हो गए हैं। बता दें कि अहमदाबाद की अमराईवाडी, साबरकांठा की बायड, पाटण की राधनपुर, महीसागर की लूनाबाद, मेहसाणा की खेरालू, बनासकांठा की थराद विधानसभा सीट पर आगामी 21 अक्टूबर को उप चुनाव होंगे।

भाजपा, कांग्रेस और राकांपा ने सभी छह सीटों पर प्रत्याशी उतारे हैं, जिससे मुकाबला रोचक हो गया है। राधनपुर और बायड कांग्रेस की नाक की लड़ाई है। इन दोनों सीटों पर पहले अल्पेश टाकोर और धवलसिंह झाला ने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा था, लेकिन बाद में वे इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा ने इन दोनों को इन्हीं सीट से प्रत्याशी बनाया है।

रघु देसाई को मैदान में उतारकर **खेला बड़ा दांव :** कांग्रेस इन दो सीट पर खास रणनीति पर काम कर रही है, राधनपुर सीट पर कांग्रेस ने रघु देसाई को मैदान में उतारकर कर टाकोर जाति के खिलाफ अन्य जातियों को लामबद्ध करने का प्रयास किया है। उधर, बायड में झाला के खिलाफ पटेल को टिकट देकर मुकाबले को रोचक बना दिया है। उधर, राकांपा के गुजरात अध्यक्ष शंकर सिंह वाघेला ने बताया कि पार्टी सभी छह सीटों पर चुनाव लड़ रही है। इसमें कांग्रेस को गठबंधन में रुचि नहीं है, इसलिए हमने सभी सीटों पर प्रत्याशी उतारे हैं। वाघेला के पुत्र महेंद्र सिंह के बायड से चुनाव लड़ने की चर्चाएं थीं, लेकिन इन मौके पर वह पीछे हट गए।

सोनिया के घर के आगे हरियाणा के कांग्रेसियों ने की नारेबाजी

विजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

कांग्रेस में टिकट वितरण को लेकर मारामारी चल रही है। मंगलवार शाम जब पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के निवास

पर केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक खत्म हुई तो वहां एकत्र पार्टी कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी शुरू कर दी। ये कार्यकर्ता सोनिया के आवास से लेकर कांग्रेस मुख्यालय परिसर तक समिति की बैठक खत्म होने का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही बैठक खत्म हुई और पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा अपनी गाड़ी से बाहर निकले तो कुछ कार्यकर्ताओं ने डॉ. अशोक तंवर जिंदाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिए। इसके बाद हुड्डा समर्थकों ने भी एकत्रित होकर अपने नेता के नारे लगाए। स्थिति तनावपूर्ण तो रही, लेकिन कार्यकर्ता खुद ही शांत होकर चले गए।

इस दौरान तंवर समर्थकों ने कहा कि वे चुनाव मैदान में पैराशूट से उतारे जाने वाले पार्टी प्रत्याशियों का विरोध करने आए हैं। साथ ही सोनिया गांधी तक अपना व्ह संदेश भी पहुंचाने आए हैं कि उनके नेता अशोक तंवर के समर्थकों को भी टिकट वितरण में पुरा महत्व दिया जाए क्योंकि उन्होंने पांच साल तक प्रदेश में संगठन को मजबूत करने का काम किया है।

कांग्रेस के टिकट वितरण में झलकेगा पार्टी का समूहिक नेतृत्व : कांग्रेस बुधवार को देर शाम सभी 90 टिकटों पर प्रत्याशी घोषित कर देगी। सूत्रों के अनुसार, टिकट वितरण में किसी एक नेता को महत्व नहीं दिया गया है बल्कि कांग्रेस के सभी क्षेत्रों के समर्थकों को समायोजित किया गया है। भाजपा की तरह कांग्रेस ने भी लोकसभा चुनाव लड़ने वाले सभी नेताओं की पसंद के उम्मीदवार विधानसभा क्षेत्रों में उतारने का फैसला लिया है। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा, कुमारी सैलजा, कुलदीप बिश्नोई, रणदीप

तंवर और हुड्डा समर्थकों के बीच हुई नारेबाजी में पैराशूट नेताओं को टिकट नहीं देने की लगाई गुहार

प्रत्याशी चयन को लेकर हुई कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में हिस्सा लेने सोनिया निवास पर आए थे पूर्व सीएम हुड्डा

मंगलवार को सोनिया गांधी की अध्यक्षता में 10 जनपथ पर दोपहर बाद तीन बजे शुरू हुई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में कांग्रेस नेता मोहसिना किववई, कैसी वेणुगोपालन, अहमद पटेल, मुकुल वासनिक,गुलाम नबी आजाद, देवेंद्र यादव, दीपा दास मुंशी सहित पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा और प्रदेशध्यक्ष कुमारी सैलजा भी उपस्थित रही। इस बैठक में कांग्रेस नेताओं ने पार्टी नीतियों के अनुसार जीतने वाले उम्मीदवारों को टिकट दिए जाने पर सोनिया गांधी से मुहर लगावाई। सोनिया की अध्यक्षता में करीब तीन घंटे तक बैठक चली। इसमें हुड्डा और सैलजा द्वारा स्क्रीनिंग कमेटी की 28 से 30 तारीख तक चली तीन दिन की लंबी मैराथन बैठक के बाद तय किए गए प्रत्याशियों के पैनोंल पर चर्चा हुई। अब सभी 90 उम्मीदवार तय कर लिए गए हैं। हालांकि सूची को स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में अंतिम रूप दिया जा रहा है। इसके बाद कांग्रेस की स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक मधुसूदन मिस्त्री की अध्यक्षता में एक बार फिर 15 गुरुद्वारा काबरागंज रोड स्थित पार्टी के वाररूम में शुरू हुई। माना जा रहा है कि इसमें तय नामों की सूची कभी भी जारी कर दी जाएगी।

सुरजवाला, किरण चौधरी सहित अशोक तंवर के समर्थकों को भी टिकट देने पर सहमति बन चुकी है।

53 फीसद पुरुष मतदाता हैं हरियाणा विधानसभा चुनाव में ।प्रदेश में 97,30,169 पुरुष व 84,60,820 महिला मतदाता अगली सरकार चुनेंगे।

52 फीसद पुरुष मतदाता हैं महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में । यहां 4,67,37,841 पुरुष और 4,27,05,777 महिला मतदाता अगली सरकार के लिए मतदान करेंगे।

राज्यसभा उप चुनाव के बाद सदन में बढ़ जाएगी राजग की एक सीट

नई दिल्ली, आइएएनएस : संसद के उच्च सदन राज्यसभा की दो सीटों के लिए 16 अक्टूबर को होने वाले उप चुनावों के बाद सत्ताकूढ़ राजग की सदन में एक सीट बढ़ जाएगी। दो सीटों के लिए ये उप चुनाव उत्तर प्रदेश से भाजपा सदस्य अरुण जेटली और बिहार से राजद सदस्य राम जेठमलानी के निधन से रिक्त हुई बिहार की सीट पर

में विपक्षी खेमे के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर प्रदेश में झारखंड के एक नेता ने बताया, चूंकि संखाबल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है इसलिए यहां विपक्ष अपना प्रत्याशी उतारने के मूड में नहीं है। वहीं, बिहार में अभी तक यह ही तय नहीं है कि रिक्त सीट पर प्रत्याशी भाजपा का होगा या उसके सहयोगी दल जदयू का। हालांकि, सूत्रों के बारे में अभी फैसला नहीं किया है। उत्तर



डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र
भारतीय इतिहास के जानकार

इतिहास स्वयं को दोहराता है। काल और पात्र बदल जाते हैं, घटनाओं का स्वरूप भी पर्याप्त परिवर्तित हो जाता है, किंतु विचार और कार्य लगभग समरूप रहते हैं। यही इतिहास का दुहरना है। किंतु विडंबना यह है कि मनुष्य इतिहास को जानते हुए भी, पूर्व में घटित घटनाओं के परिणामों से परिचित होकर भी, वही त्रुटियां करता है जो अतीत में घातक सिद्ध हो चुकी होती हैं। भारतीय समाज और साहित्य में इतिहास का यह दुहराव धर्मराज युधिष्ठिर और महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व में पग-पग पर परिलक्षित होता है।

धर्मराज युधिष्ठिर सत्यवादी हैं, सहिष्णु हैं और प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं कष्ट सहकर भी बंधुत्व के आकांक्षी हैं। यही प्रवृति महात्मा गांधी के स्वभाव में भी दिखाई देती है। वे भी अलगाववादी मुस्लिम मानसिकता से मैत्री के अधिलापी हैं और उसकी हर शर्त स्वीकार करने को तत्पर मिलते हैं। खिलाफत आंदोलन से लेकर भारत विभाजन तक की लगभग समस्त घटनाएं इस तथ्य को रेखांकित करती हैं।

जिस प्रकार कौरवों के समक्ष युधिष्ठिर के समस्त मैत्री प्रयत्न विफल होते हैं और दुर्योधन की उच्चाकांक्षा से उत्पन्न राज्याभिषेका हास्तनापुर के विभाजन का कारण बनती है, उसी प्रकार गांधी के भी सभी प्रयत्न निष्फल होते हैं और अंततः भारत विभाजन की अलगाववादी कट्टरनीति सफल हो जाती है।

यहां तत्कालीन भारतीय नेतृत्व के प्रतीक पुरुष महात्मा गांधी यह विस्तृत कर देते हैं कि राज्य का विभाजन विघटनकारी अलगाववादी सोच का सार्थक और स्थायी समाधान नहीं है। यदि होता तो हस्तनापुर और इंद्रप्रस्थ दो स्वतंत्र राज्य बन जाने के उपरांत कौरवों का पांडवों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष समाप्त हो जाता और दोनों राज्यों के शासक अपनी-अपनी सीमाओं में सुखपूर्वक रह लेते। किंतु ऐसा नहीं हुआ और हस्तनापुर राज्य विभाजन के उपरांत पांडवों के पुरुषार्थ से निर्मित इंद्रप्रस्थ को हस्तगत करने के नए कूट प्रयत्न पुनः प्रारंभ हो गए। ठीक यही स्थिति भारत विभाजन की विभीषिका के उपरांत दिखाई दी। पाकिस्तान ने अस्तित्व में आते ही हिंदुस्तान के लिए नई मुसवीबत खड़ी करना प्रारंभ कर दिया। इतिहास को यह प्रामाणिक सीख कि विभाजन द्वेषपूर्ण मंदांध मानसिक-व्याधि का सही उपचार नहीं है-आधुनिक भारत के नेतृत्व ने सर्वथा उपेक्षित की और एक नए महाभारत की नींव डाल दी। यह महाभारत 70 वर्ष से चल रही है।

धर्मराज युधिष्ठिर के उच्च आदर्श और सद्भाव उनकी महानता को प्रतिपादित कर उन्हें आदरणीय और बहुमान्य बनाते हैं, किंतु धृतराष्ट्र, शकुनि और दुर्योधन जैसी कुटिल मानसिकता युधिष्ठिर की सहृदयता को स्वीकार नहीं करती। इनकी सत्ता लोभुपना युधिष्ठिर की शांतिप्रियता को कायरता समझ उसका



अखिलेश शर्मा@akhilshesharma1

गांधी की जिंदगी का इतिहास कई जिंदगियों का इतिहास है। उनकी स्मृति को किसी राज्यसत्ता के संरक्षण की जरूरत नहीं। सत्ताओं को जरूर गांधी की जरूरत है।

ओम थानवी@omtharvi

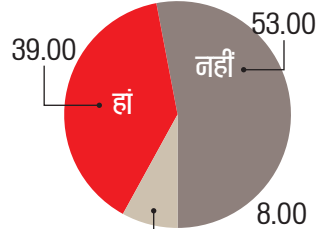


हर्ष गयनका@hvgoenka

को तबाह नहीं किया, बल्कि पुरा अलबम खरीदने की मजबूरी ने किया। अमेजन ने रिटेलरों का धंधा चौपट नहीं किया, सहूलियत और व्यापक विकल्पों ने किया। असल में यह तब तकनीकी हल नहीं हैं, बल्कि ग्राहकों पर ध्यान केंद्रित करने का परिणाम है।

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या असम राष्ट्रप्लस का नियंत्रण गृह मंत्रालय को सौंपने से राष्ट्रीय सुरक्षा पर असर पड़ेगा?



सभी आंकड़े प्रतिशत में हैं।

आज का सवाल

क्या टेस्ट टीम में रिशभ पंत के स्थान पर रश्मिमान साहा को मौका देने का फैसला सही है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मेसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y**, **N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें **Y** - हां, **N** - नहीं, **C** - कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

बनकर गांधी लोग कुछ रहे भुनाते नाम, जो बापू कहकर गए किया न कुछ भी काम। किया न कुछ भी काम अपूरा है एजेंडा, हुआ न भारत स्वच्छ रहे फहराते झंडा। बस कुर्सी कच्चाय रहे चलते वे तनकर, बापू यह सब देख दुखी हैं मूरत बनकर।

- ओमप्रकाश तिवारी

आजकल

धर्मराज युधिष्ठिर जैसे महात्मा गांधी

इतिहास स्वयं को दोहराता है। काल और पात्र बदल जाते हैं, घटनाओं का स्वरूप भी परिवर्तित हो जाता है, किंतु विचार और कार्य लगभग समरूप रहते हैं। किंतु विडंबना यह है कि मनुष्य इतिहास को जानते हुए भी, पूर्व में घटित घटनाओं के परिणामों से परिचित होकर भी, वही त्रुटियां करता है जो अतीत में घातक सिद्ध हो चुकी होती हैं। भारतीय समाज और साहित्य में इतिहास का यह दोहराव धर्मराज युधिष्ठिर और महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व में पग-पग पर परिलक्षित होता है

उपहास करती है। यही स्थिति आधुनिक भारत

की राजनीति में तब देखी जा सकती है, जब दुर्योधनी भावों से भरी मोहम्मद अली जिन्न की अलग देश की मांग महात्मा गांधी के सारे अनुनय-विनय टुकराकर निर्दोष हिंदुओं के नरसंहार को बढ़ावा देती है। और अंततः पाकिस्तान बनवाकर ही मानती है। वहां कोई सत्याग्रह सफल नहीं होता। प्रेम, अहिंसा, बंधुत्व और सह-अस्तित्व के सारे दिव्यास्त्र एक निष्ठुर दुराग्रह के समक्ष दम तोड़ते दिखाई देते हैं।

यदि समय रहते किसी व्याधि का समुचित उपचार न किया जाए तो वह धीरे-धीरे पुष्ट होकर प्राणघातक बन जाती है। महाभारत में हस्तनापुर की राज्यसत्ता ने अंधे पुनर्मोह में शकुनि और दुर्योधन की आपराधिक षड्यंत्रकारी मानसिकता का कोई उपचार नहीं किया। परिणामतः वचपन में भीम को विष देने वाली कूर मानसिकता अंततः कुरुक्षेत्र के मैदान में भयानक संहार का कारण बनी। भारत विभाजन की विषबेलि का बीज भी महात्मा गांधी की तुट्टीकरण वाली मोहग्रस्त दुर्नीति से सिंचित होकर पल्लवित-पुष्पित हुआ तथा पाकिस्तान बनते ही वहां के लाखों हिंदुओं-सिखों के सर्वनाश एवं विस्थापन का कारण बना। यदि ज्येष्ठ पांडुपुत्र युधिष्ठिर ने अपने उत्तरदाक्षिण का सम्यक निर्वाह करने पर ध्यान दिया तो वह शकुनि को हस्तनापुर पर धूल डालकर की, वही ऐतिहासिक भूल



शशांक द्विवेदी

डायरेक्टर, मेवाड़ यूनिवर्सिटी

अंतरिक्ष में अपनी स्वदेश निर्मित प्रौद्योगिकी प्रतिभा से भारत पूरे विश्व को चमत्कृत कर रहा है। अंतरिक्ष के इतिहास में भारत का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिख देने वाला भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का मंगलयान लाल ग्रह का अध्ययन करने के लिए छह महीने के मिशन पर भेजा गया था, लेकिन यह पांच साल बाद भी सही तरह से काम कर रहा है और वैज्ञानिकों को लगातार मंगल ग्रह की तस्वीरें तथा डाटा भेज रहा है। पांच नवंबर, 2013 को मंगल यात्रा पर भेजे गए इस मंगलयान ने 24 सितंबर, 2014 को मंगल की कक्षा में पहुंचकर इतिहास चरित दिया था। इसके साथ ही भारत अपने पहले प्रयास में ही मंगल पर पहुंच जाने वाला दुनिया का पहला देश बन गया था। मंगल पर पहुंचने वाले अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ जैसी देशों को कई प्रयासों में सफलता मिली थी। महज 450 करोड़ रुपये की लागत से तैयार



मुद्रा

सुशील कुमार सिंह
निदेशक, वाईएस रिसर्च फाउंडेशन ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन

जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं जहां गांधी का स्पर्श न हो। इसी से यह प्रतिबिंबित होता है कि एक महात्मा का महत्व पूरी दुनिया में कितना और क्यों है। सभी में समाए गांधी केवल हाड़-मांस के मानव नहीं, बल्कि महानामन थे। गांधी सत्य और अहिंसा की पाठशाला एवं भारत की एक ऐसी स्थाई विरासत हैं जिसका उदाहरण दुनिया में दूसरा नहीं। गैर-बलाबारी और अन्याय के चंगुल में फंसी दुनिया को राह दिखाने का एक समूचा दर्शन खोजना हो तो गांधी में ढूंढा जा सकता है। उन्हें दुनिया से गए सात दशक हो गए, लेकिन उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। कई चरम पर पहुंच चुकी समस्याओं का निदान उनमें छुपा है। शायद यही कारण है कि जीवन को तबाह कर रहे प्लास्टिक और पॉलीथीन से निजात पाने के लिए दो अक्टूबर की तारीख जो गांधी जयंती के लिए जानी जाती है उसे चुना गया है।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2022 तक देश को सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त

भारत विभाजन की अमंगलकारी मांग करने

वाले मोहम्मद अली जिन्न को आवश्यकता से अधिक महत्व देकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में

दोहराई गई। यदि जिन्न के स्थान पर अब्दुल गफ्फार खान जैसे अन्य उदार विचारों वाले

नेताओं को आगे कर कटारवादी मुस्लिम लीग को हस्तानापुर के द्यूतक्रीड़ा-गृह में आ

डटे तथा सर्वस्व गंवाकर अपने और अपने परिवार के अपमान का कारण बने। उनके एक अविवेकपूर्ण कृत्य ने न केवल उन्हें

उनकी राज्यश्री से वंचित किया, आपुन उनकें दिग्विजयी भाइयों सहित द्रोपदी को भी 12 वर्ष

के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के लिए संकटापन्न जीवन-पथ पर धकेल दिया। इसी

प्रकार भारत विभाजन के भावी दुष्परिणामों पर गंभीर चिंतन किए बिना महात्मा गांधी के नेतृत्व

में कांग्रेस ने विभाजन की स्वीकृति देकर लाखों देशवासियों का धन, सम्मान और जीवन संकट

में डाल दिया। इस अविवेकपूर्ण निर्णय ने न केवल उस समय संहार के गहरे घाव दिए आपुन

देश के विरुद्ध भावी परमाणु युद्ध की प्रथमभी निमित्त कर दी। यदि उस समय पाकिस्तान न बना

होता तो न आज पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद होता, न जम्मू-कश्मीर की समस्या होती, न

पाकिस्तान की धरती पर बैठकर चीन को हमारे विरुद्ध संघर्षपूर्ण सामरिक अभियान क्रियान्वित

करने का अवसर मिलता। पाकिस्तान बनाए युधिष्ठिर ने शकुनि और दुर्योधन के क्रूर-कृत्य

पर धूल डालकर की, वही ऐतिहासिक भूल

लाख प्लास्टिक की बोतलें खरीदी जाती हैं दुनिया में एक मिनट के भीतर और हर साल 40 हजार करोड़ प्लास्टिक की थैलियों का इस्तेमाल होता है।

उत्सव से ज्यादा आत्मचिंतन का अवसर

फ्रेडरिक फिशर जैसे लोग थे, जो यूरोप और अमेरिका के लोगों को सावधान करते हुए

कहते थे कि आपकी सभ्यता की जड़ें बहुत कमजोर हैं। गांधी ने शक्ति का नया संचार करने वाल मंत्र गढ़ लिया है। शस्त्र शक्ति

के सामने गांधी ने आत्मशक्ति को खड़ा कर दिया। इसी बात को चिंतक और पत्रकार

वे भी संघर्ष में कूटें थे। फिर क्यों नहीं भारत के सूत्र' में प्रभावी ढंग से विश्लेषित किया

है। उनका मत है कि गांधी जिन आदर्शों की बात करते हैं, वे भारतीय ज्ञान परंपरा में पहले

से मौजूद हैं। गांधी जी के प्रयोग में सारे जगत को दिलचस्पी है और उसका महत्व युगों तक

विश्वास नहीं होगा कि हाड़-मांस का ऐसा कोई धूमिल कर बैठे। क्या गांधीजी के सिद्धांतों

के साथ ही पूरी दुनिया उनका स्मरण कर रही है। भारतीयों के लिए यह प्रसंग गौरव का क्षण

है। भारतमाता के जिन सपूतों ने समय-समय पर भारत की संस्कृति और उसके संदेश

को, उसमें अंतर्निहित आध्यात्मिक चिंतन को विश्व के सामने रखकर उन्हें चमत्कृत

किया, उनमें गांधी जी का नाम आदर से जोड़ा जा सकता है। उनके विचारों और कार्यों से

प्रभावित होकर महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि भावी पीढ़ी को यह

विश्वास नहीं होगा कि हाड़-मांस का ऐसा कोई प्राणी भी हमारे बीच था।

गांधी जी ने हिंद स्वराज की परिकल्पना ही आध्यात्मिक स्वराज्य के रूप में की थी।

सत्य, अहिंसा और प्रेम की बात, जो गांधी जी हर मौके पर दोहराते थे, उस भौतिकवादी

दुनिया को तब समझ में नहीं आई थी। वे गांधी को एक रहस्यमय तांत्रिक के रूप में ही

विश्लेषित करते रहे। लेकिन तब भी विशाण

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि लॉर्ड माउंटबेटन की जिन्न के प्रति अतिरिक्त आसक्ति और पाकिस्तान के निर्माण में उनकी रूचि इस तथ्य की साक्षी है। शोषण और उल्टीड़न के दुर्ग धर्म-दर्शन की बौद्धिक उपलब्धियों से नहीं टूटते। उन्हें ढहाने के लिए प्रचंड बाहुबल और अपूर्व

शक्तियां इनकी परवाह नहीं करतीं और कभी-कभी तो इनके विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। महाभारत में भीष्म-द्रोण आदि का कौरवों को समर्थन और ब्रिटिश प्रतिनिधि ल

खुद के बारे में बापू की सोच

एक व्यक्ति की क्षमता की सीमाएं हैं और जैसे ही वह यह समझने लगता है कि वह सब कुछ करने में समर्थ है, ईश्वर उसके गर्व को चूर कर देता है। जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझे स्वभाव में इतनी विनम्रता मिली है कि मैं बच्चों और अनुभवहीनों से भी मदद लेने को तैयार रहता हूं।



हृदय की सच्ची और शुद्ध कामना अवश्य पूरी होती है। अपने अनुभव में, मैंने इस कथन को सदा सही पाया है। गरीबों की सेवा मेरी हार्दिक कामना रही है और इसने मुझे सदा गरीबों के बीच ला खड़ा किया है और मुझे उनके साथ तादात्म्य स्थापित करने का अवसर दिया है।

मैं अपने देशवासियों से कहता हूँ कि उन्हें आत्मत्याग के अलावा और किसी सिद्धांत का अनुसरण करने की जरूरत नहीं है—प्रत्येक युद्ध से पहले आत्मत्याग आवश्यक है। आप चाहे हिंसा के पक्षधर हों या अहिंसा के, आपको त्याग और अनुशासन की अग्निपरीक्षा से गुजरना ही होगा।

मुझे जीवन भर गलत समझा जाता रहा। हर एक जनसेवक की यही नियति है। उसकी खाल बड़ी मजबूत होनी चाहिए। अगर अपने बारे में कही गई हर गलत बात की सफाई देनी पड़े और उन्हें दूर करना पड़े तो जीवन भार हो जाए। मैंने अपने जीवन का यह नियम बना लिया है कि अपने बारे में किए गए गलत निरूपणों या मिथ्या प्रचारों पर स्पष्टीकरण न देता फिरूँ सिवाय तब के जबकि उनको सुधारने जाने की जरूरत लगे। इस नियम के पालन से मेरी कई चिताएं मिटी और बहुत—सा समय बचा।



मैं सोचता हूँ कि वर्तमान जीवन से ‘संत’ शब्द निकाल दिया जाना चाहिए। यह इतना पवित्र शब्द है कि इसे यूं ही किसी के साथ जोड़ देना उचित नहीं है। मेरे जैसे आदमी के साथ तो और भी नहीं, जो बस एक साधारण—सा सत्यशोधक होने का दावा करता है। जिसे अपनी सीमाओं और अपनी बुद्धियों का अहसास है और जब—जब उससे बुद्धियां हो जाती हैं, तब—तब बिना हिचक उन्हें स्वीकार कर लेता है और जो निस्संकोच इस बात को मानता है कि वह किसी वैज्ञानिक की भांति, जीवन की कुछ ‘शाश्वत सच्चाइयों’ के बारे में प्रयोग कर रहा है, किंतु वैज्ञानिक होने का दावा भी वह नहीं कर सकता, क्योंकि अपनी पद्धतियों की वैज्ञानिक यथार्थता का उसके पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है और न ही वह अपने प्रयोगों के ऐसे प्रत्यक्ष परिणाम दिखा सकता है जैसे कि आधुनिक विज्ञान को चाहिए।

सच्चा उपवास शरीर, मन और आत्मा—तीनों की शुद्धि करता है। यह देह को यंत्रणा देता है और उसी सीमा तक आत्मा को स्वतंत्र करता है। इसमें सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना आश्चर्यजनक परिणाम उत्पन्न करती है। यह आत्मा की और अधिक शुद्धि के लिए की जाने वाली आर्त पुकार ही तो है। इस प्रकार प्राप्त की गई शुद्धि जब किसी शुभ उद्देश्य के लिए प्रयुक्त होती है तब वह प्रार्थना बन जाती है।

छल—कपट और असत्य आज दुनिया के सामने सीना ताने खड़े हैं। मैं ऐसी स्थिति का विवश साक्षी नहीं बन सकता... यदि आज मैं चुपचाप और निष्क्रिय बन कर बैठ जाऊंगा तो ईश्वर मुझे इस बात के लिए दंडित करेगा कि मैंने समुची दुनिया को अपनी चपेट में ले रही इस आग को बुझाने के लिए उसके द्वारा प्रदत्त सामर्थ्य का इस्तेमाल क्यों नहीं किया।

M.K. Gandhi

डाटागिरी

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पुरुष शिक्षक महिलाओं से ज्यादा

भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पुरुष शिक्षकों की संख्या महिला शिक्षकों से ज्यादा है। एक सर्वे के अनुसार, भारत में उच्च शिक्षा के कुल 14.16 लाख शिक्षकों में 57.85 प्रतिशत पुरुष और 42.15 प्रतिशत महिलाएं हैं। महिला और पुरुष शिक्षकों का यह अनुपात बिहार में सबसे खराब है यहां चार पुरुष शिक्षकों पर एक महिला शिक्षक है। इस सर्वे में लिंगानुपात के साथ ही शिक्षकों को सामाजिक, धार्मिक और पदों के हिसाब से भी वर्गीकृत किया गया है।

जोएनएन, नई दिल्ली	
देश की उच्च शिक्षा पर किए गए अखिल भारतीय सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की संख्या 2018-19 में 14,16,299 है। इस सर्वेक्षण में अन्य पहलुओं को भी बताया गया है, जो इन उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षक समुदाय के सामाजिक, धार्मिक, लिंगानुपात और अन्य पहलुओं को भी उजागर करता है।	
14.16 लाख शिक्षकों में से 57.85 फीसद पुरुष और 42.15 फीसद महिलाएं हैं। महिला और पुरुष शिक्षकों का सबसे खराब अनुपात (1:4) बिहार में है। यहां 79 फीसद पुरुष शिक्षक हैं तो मात्र 21 फीसद महिला शिक्षक। इसके बाद झारखंड का नंबर आता है। यहां 70 फीसद पुरुष तो 30 फीसद महिला शिक्षक हैं। इसके बाद उत्तर प्रदेश है, जहां कुल शिक्षकों के एक तिहाई से कम महिला शिक्षक हैं।	
कुछ ऐसे राज्य भी हैं जैसे- केरल, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, मेघालय, नगालैंड, दिल्ली और गोवा जहां महिला शिक्षकों की संख्या पुरुष शिक्षकों से अधिक है। जाति और धर्म के हिसाब से देखें तो भारत में सामान्य वर्ग के शिक्षक कुल शिक्षकों के 56.7 फीसद हैं। ओबीसी 32.1 फीसद, एससी के 8.8 तो एसटी के 2.4 फीसद हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यक समूह के 5.4 फीसद शिक्षक तो अन्य अल्पसंख्यक समूहों के 9.2 प्रतिशत हैं।	

शिक्षकों में लिंगानुपात (प्रति 100 पुरुषों पर महिलाएं)	
एससी	57
एसटी	68
ओबीसी	68
दिव्यांग	37
मुस्लिम	57
अन्य अल्पसंख्यक	151
कुल	73

शिक्षकों में सबसे अधिक एससी और एसटी के अनुपात वाले राज्य आंध्र प्रदेश (13.83 प्रतिशत एससी और 1.6 प्रतिशत एसटी), महाराष्ट्र (11.39 प्रतिशत एससी और 1.52 प्रतिशत एसटी) और तेलंगाना (11.17 प्रतिशत एससी और 3.5 प्रतिशत एसटी) हैं।

कुल मिलाकर बात करें तो देश में 100 पुरुष शिक्षकों पर 73 महिला शिक्षक हैं। एससी में 100 में 57 का अनुपात तो एसटी और ओबीसी में 100 में 68 का अनुपात है। मुस्लिमों में प्रति 100 पुरुष शिक्षकों पर 57 महिला शिक्षक हैं। वहीं, अन्य अल्पसंख्यकों में महिलाएं 151:100 के अनुपात में पुरुष शिक्षकों को पछाड़ देती हैं।

वरिष्ठ पदों पर महिलाएं पुरुष शिक्षकों से आगे : पद के मामले में देखें तो वरिष्ठ पदों पर पुरुष महिला शिक्षकों



शिक्षकों में लिंगानुपात (प्रति 100 पुरुषों पर महिलाएं)	
एससी	57
एसटी	68
ओबीसी	68
दिव्यांग	37
मुस्लिम	57
अन्य अल्पसंख्यक	151
कुल	73

पद के हिसाब से महिलाओं की स्थिति (प्रति 100 पुरुषों पर)	
प्रोफेसर	37
रीडर्स व एसोसिएट प्रोफेसर	58
लेक्चरार और असिस्टेंट प्रोफेसर	74
ट्यूटूर	190
अस्थाई शिक्षक	98



को पछाड़ते हैं। वहीं, ट्यूटॉर के मामले में महिलाएं आगे हैं। प्रति 100 पुरुष ट्यूटॉर में 190 महिलाएं हैं, यानी कि लगभग दोगुना। अस्थाई शिक्षकों के मामले में पुरुष और महिला शिक्षकों का अनुपात लगभग बराबर है। यहां प्रति 100 पुरुष शिक्षकों में 98 महिलाएं हैं।

यहां मां के जयकारों के साथ गूंजते हैं शहीदों के तराने

जागरण विशेष

शहीदों के नाम से अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित की जाती है ऊधमपुर के पिंगला माता मंदिर में

शारदीय नवरात्र पर पिंगला माता यात्रा की भी रहती है धूम, शहीदों के परिजन भी पहुंचते हैं

रोहित जडियाल, जम्मू



ऊधमपुर स्थित पिंगला माता मंदिर में हर शारदीय नवरात्र पर शहीद जवानों के नाम से अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित की जाती है। यहां मां के जयकारों के साथ शहीदों के तराने गूंजते हैं। शारदीय नवरात्र में जम्मू-कश्मीर का पूरा वातावरण मां के जयघोष से भूने लगता है। वैष्णो देवी के साथ अन्य मंदिरों तक दर्जनों यात्राएं आयोजित होती हैं। हर और मां के जयकारे सुनाई पड़ते हैं, लेकिन ऊधमपुर के रामनगर क्षेत्र से चलने वाली यह यात्रा कुछ अनोखी है। यहां मां के जयकारों के साथ ही देश के लिए सर्वोच्च बलिदान करने वाले वीर सप्नों के सम्मान में तराने गूंजते हैं और मां के दरबार में इन शहीदों के नंबर से अखंड ज्योति जलती है।

अब रेलकर्मों देश में रेलवे के किसी भी अस्पताल में करा सकेंगे इलाज

उम्मीद काई

दीपक वहल, अंबाला

एशिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में कर्मचारी और अधिकारी मेडिकल सुविधाओं से वंचित न रहें, इसके लिए भारतीय रेलवे ने उम्मीद काई बनाने की पहल की है। अब कहीं भी कर्मचारी या अधिकारी रेलवे के किसी भी अस्पताल में उपचार करवा सकेंगे। मौजूदा समय एक मंडल से दूसरे मंडल यदि रेलकर्म या अधिकारी रेलवे अस्पताल में इलाज के लिए जाते हैं तो उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता है। कोई दस्तावेज न दिखाने पर रेलवे अस्पताल में इलाज नहीं मिल पाता। इन दिक्कतों को दूर करने के लिए रेलवे ने देशभर के कर्मचारियों का डाटा ऑनलाइन करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

अंबाला रेल मंडल की बात करें, तो हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, उत्तर प्रदेश और चंडीगढ़ में करीब 14 हजार कर्मचारी विभिन्न स्टेशनों पर तैनात हैं। इनमें से 90 फीसद डाटा ऑनलाइन किया जा चुका है, जबकि साढ़े 13 हजार सेवानिवृत्त कर्मचारियों का डाटा ऑनलाइन करने की प्रक्रिया जारी है। डीआरएम दिनेश चंद्र शर्मा ने बताया कि आपातकालीन स्थिति में कई बार कर्मचारी के



समस्याओं के समाधान को रेलवे ने उठाया कदम

डीआरएम दिनेश चंद्र शर्मा ने बताया कि कई मामले ऐसे प्रकाश में आए हैं कि जब रेलकर्म या अधिकारी रेलवे अस्पताल में उपचार के लिए आए तो दिक्कतें आईं। उनके पास अपनी पहचान बताने के लिए कोई कागजात नहीं थे, जिसके कारण डॉक्टर ने उनका इलाज करने में असमर्थता जता दी। ऐसे में रेलवे ने एक सेंट्रलाइज्ड प्रक्रिया को शुरू किया, जिससे देशभर के लाखों रेलवे कर्मचारियों (कार्यरत और रिटायर्ड) को फायदा होगा।

पास कोई दस्तावेज नहीं होता, जिस कारण नियम के चलते डॉक्टर बाध्य हो जाते हैं और मरीज का उपचार नहीं कर पाते। ऐसे में देशभर के रेलवे अस्पतालों में मौजूदा और सेवानिवृत्त कर्मचारियों का डाट ऑनलाइन होगा। इलाज करवाने वालों की मेडिकल हिस्ट्री भी कंप्यूटर में दर्ज होगी। किसी भी मंडल या जोन का

पुलिस, वकील, विद्यार्थियों को मिलेगा साइबर लॉ का ज्ञान

नईदुनिया, जबलपुर

मध्य प्रदेश की धर्मशास्त्र नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी जबलपुर में साइबर क्राइम से जुड़े कानून की पढ़ाई कराई जाएगी। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के साथ-साथ पुलिस अधिकारियों और वकीलों को भी जोड़ा जाएगा। विश्वविद्यालय दिसंबर से यह पाठ्यक्रम शुरू करेगा। केंद्र सरकार ने इसके लिए अनुदान भी जारी कर दिया है। दरअसल, देश में बढ़ते साइबर क्राइम पर लगाम कसने के लिए साइबर एक्सपर्ट तैयार करने की मुहिम चलाई जा रही है। इसके लिए साइबर क्राइम पर सर्टिफिकेट और पीजी डिप्लोमा कोर्स प्रारंभ किए जा रहे हैं। इसके तहत पुलिस अफसर, ज्यूडिशियल अफसर एवं अन्य विभागों के अधिकारियों को ट्रेनिंग दी जाएगी। नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी एवं नेशनल ई-गवर्नंस डिवीजन, इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार में साइबर लॉ बुक है। यात्रा के दौरान वह आठ साइकिल, 50 टायर और 37 ट्यूब बदल चुके हैं। लोगों को जागरूक करने को लेकर उनका नाम गिनीज बुक में भी शामिल है।

इनकी दी जाएगी जानकारी

प्रोग्राम के जरिये साइबर लॉ से जुड़े कानूनी दांव-पेंच के बारे में जानकारी दी जाएगी। डिजिटल साक्ष्य के बारे में बताया जाएगा। साइबर क्राइम से जुड़ी जांच की बारीकी को समझाया जाएगा।।

30 सीटें होंगी

पाठ्यक्रम में आरंभ में 30 सीटें होंगी। प्रवेश की प्रक्रिया अभी तय नहीं की गई है। ऑनलाइन जानकारी देने के लिए करीब एक करोड़ की लागत से आधुनिक कंप्यूटर तैब का निर्माण संस्थान में करवाया जा रहा है।

लेकर गुलाबी मीनाकारी का ज्ञान, विदेशी छात्र बढ़ाएंगे काशी का मान

अद्भुत हस्तशिल्प की मुरिद दुनिया, अमेरिकन इंटरनेशनल स्कूल ने भेजे छात्र

अमेरिका, दक्षिण कोरिया व जापान के छात्रों ने सीखी वारीकिया

राष्ट्रीय पुरस्कार से अलंकृत कुंज बिहारी सिंह से सीखी कला

वाराणसी में गुलाबी मीनाकारी का प्रशिक्षण लेते विदेशी छात्र। फाइल

मुहम्मद रईस, वाराणसी

हथकरघा और हस्तकला को वैश्विक मंच देने के लिए वेसे तो तमाम प्रयास जारी हैं, लेकिन अब इसमें एक नया अध्याय भी जुड़ गया है। काशीवासियों के साथ अब विदेश भी इसके प्रचार-प्रसार का जिम्मा संभालेंगे। जो हो..., बात गुलाबी मीनाकारी की हो रही है, जिसकी अद्भुत कलाकारी ने दुनियाभर के कला प्रेमियों को आकर्षित किया है। वही वजह है कि अमेरिकन इंटरनेशनल स्कूल ने इस कला की बारीकियों को सीखने के लिए 20 छात्रों का प्रतिनिधिमंडल काशी भेजा था। इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से अलंकृत कुंज बिहारी सिंह सहित लोकेश कुमार सिंह, तरुणा कुमार सिंह व कृष्ण कुमार सिंह ने गत माह गायघाट स्थित अपने आवास पर प्रशिक्षण दिया। इनमें अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जापान, मोरक्को, सर्बिया के छात्र थे। कला की बारीकियों से वाकफ कराते हुए छात्रों को जीआइ (भौगोलिक संकेतक) की जानकारी दी गई। इसके बाद सभी ने स्वयं की डिजाइन के आधार पर कई उत्पाद तैयार किए, जिन्हें वे साथ ले गए। छात्रों का कहना था कि इस कला को संस्कृति के अनुरूप विस्तार देकर दुनियाभर में काशी का मान बढ़ाएंगे।

कला को जीआइ से संजीवनी : करीब पांच वर्ष पूर्व कुंज बिहारी सिंह सहित इस कला से जुड़े बचे हुए करीब 50 शिल्पियों ने पलायन का मन बना लिया था, लेकिन जीआइ पंजीयन के बाद न सिर्फ उनमें आस जमी, बल्कि सालाना कारोबार भी बढ़ा। इसका नतीजा रहा कि पलायन कर चुके

निश्चित तापमान में चढ़ता है रंग

पुराने बनारस के पक्के महाल, भैरव गली, आसभैरव, गायघाट की गलियों में कई पीढ़ियों से यह काम होता आया है। शिल्पी चांदी और सोने पर गुलाबी रंग की इनेमलिंग का कार्य एक निश्चित तापमान में पक्के रंगों के प्रयोग द्वारा करते हैं। यह कार्य सोने-चांदी के आभूषणों, राजवाटी सामानों—मसनन हाथी, घोड़े, ऊंट, चिड़िया, मोर आदि पर किया जाता है। गुलाबी रंग चढ़ाने की विशेष तकनीक के कारण ही यहां की मीनाकारी दुनियाभर में मशहूर है।



गुलाबी मीनाकारी से तैयार कलाकृतियां।

शिल्पी दोबारा इससे जुड़ने लगे। रोजगार की आस में युवाओं ने भी इस ओर रुख किया। वर्तमान में 200 से अधिक शिल्पी इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। यहां से तैयार उत्पाद यूरोप, अमेरिका संग खाड़ी देशों में निर्यात किए जाते हैं। इसका सालाना कारोबार लगभग दस करोड़ रुपये है।

राष्ट्रपिता एक रूप अनेक

आज दुनिया के किसी कोने में चले जाइए और किसी भी व्यक्ति से पूछिए कि क्या वह किसी दो भारतीय विभूतियों का नाम बता सकता है? उत्तर में संभवतया वह गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी के नामों का उल्लेख करे। पिछले 2600 वर्षों की समयाधि के दौरान पैदा हुए सभी भारतीयों में से ये दोनों हस्तियां सर्वाधिक लोकप्रिय रहें। इन्हें सर्वाधिक सम्मान मिला। इसका सर्वाधिक प्रमुख कारण माना जा सकता है कि इनकी नीतियां एवं सिद्धांत काफी कुछ मिलते-जुलते हैं और वर्तमान परिवेश में भी लागू होते हैं। गांधी जयंती के अवसर पर आएए बापू के जीवन से जुड़े कुछ अनछुए तथ्यों पर खतों एक नजर:

भारतीयों में से ये दोनों हस्तियां सर्वाधिक लोकप्रिय रहें। इन्हें सर्वाधिक सम्मान मिला। इसका सर्वाधिक प्रमुख कारण माना जा सकता है कि इनकी नीतियां एवं सिद्धांत काफी कुछ मिलते-जुलते हैं और वर्तमान परिवेश में भी लागू होते हैं। गांधी जयंती के अवसर पर आएए बापू के जीवन से जुड़े कुछ अनछुए तथ्यों पर खतों एक नजर:

गांधीजी के पास कृत्रिम दांतों का एक सेट हमेशा मौजूद रहता था। इसे वे अपनी लंगोटी में लपेटकर चलते थे। जब उन्हें भोजन करना होता था, तभी उनका उपयोग करते थे। भोजन करने के बाद उन्हें अच्छी तरह से धोकर, सुखाकर फिर से लंगोटी में लपेटकर रख लेते थे।



ये आयरिश उच्चारण वाली अंग्रेजी बोलते थे। इसका एक मात्र कारण था कि शुरुआती दिनों में गांधीजी को अंग्रेजी पढ़ाने वाले अध्यापकों में से एक आयरिश व्यक्ति भी था।

महात्मा गांधी कभी अमेरिका नहीं गए, लेकिन वहां उनके कई प्रशंसक और अनुयायी बन गए थे। इन्हीं में से एक उनके असाधारण प्रशंसक प्रसिद्ध उद्योगपति और फोर्ड मोटर के संस्थापक हेनरी फोर्ड भी थे। गांधीजी ने उन्हें एक स्वहस्ताक्षरित चरखा भेजा था। द्वितीय विश्व युद्ध के भयावह समय के दौरान फोर्ड इस चरखे से सूत काता करते थे



द.आफ्रीका में वकालत के दौरान इनकी सालाना आय 15 हजार डॉलर तक पहुंच गई थी। उन दिनों में अधिकांश भारतीयों के लिए यह आय एक सपना थी।



सविनय अवज्ञा (नाफरमानी) की प्रेरणा उन्हें अमेरिकी व्यक्ति की एक किताब से मिली। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट डेविड थोरियू नामक यह व्यक्ति मेसाचुसेट्स में एक संन्यासी की तरह जीवन बिताता था। उसने सरकार को टैक्स अदा करने से मना कर दिया, जिसके चलते उसे जेल भेज दिया गया। वहीं पर डेविड ने सविनय अवज्ञा पर एक किताब लिखी और लोगों को टैक्स न चुकाने की शिक्षा देने लगा। वहां पर लोगों ने उसकी किताब को गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन भारत में वह किताब गांधीजी के हाथ लग गई। उन्होंने इस रणनीति को आजमाने का विचार किया। उन्होंने देखा कि अंग्रेज अपने वायदे के खिलाफ भारत को आजादी नहीं दे रहे हैं, लिहाजा अंग्रेजी हुकूमत को सबक सिखाने के लिए उन्होंने लोगों से टैक्स देने के बजाय जेल जाने का आह्वान किया। इसके साथ उन्होंने विदेशी सामान के बहिष्कार का भी आंदोलन चलाया। जब ब्रिटिश हुकूमत ने नमक पर टैक्स लगा दिया तो गांधीजी ने दांडी यात्रा के तहत समुद्र तट पर जाकर खुद का नमक बनाया।

अपने अहिंसा और सविनय अवज्ञा जैसे सिद्धांतों से राष्ट्रपिता ने दुनिया के लाखों लोगों को प्रेरित किया। शांति के नोबेल पुरस्कार विजेता कई विश्व नेताओं ने गांधीजी के विचारों से प्रभावित होने की बात स्वीकारी है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर (अमेरिका), दलाईलामा (तिब्बत), आंग सान सु की (म्यांमार), नेल्सन मंडेला (दक्षिण आफ्रीका), एडोल्फो पेरेज इस्क्वीवेल (अर्जेंटीना) और अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इस सत्य को स्वीकारा है कि वे गांधी के विचारों एवं दर्शन से प्रभावित हैं। ये बात और है कि अपने विचारों और सिद्धांतों से नोबेल पुरस्कार विजेताओं को प्रभावित करने वाले महात्मा गांधी को इस पुरस्कार से वंचित रहना पड़ा।



महान भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधीजी के बारे में एक बार कहा था, 'हमारी आने वाली पीढ़ियां शायद ही यकीन कर पाएं कि कभी हॉइ-मांस का ऐसा ईसान (गांधीजी) इस धरती पर मौजूद था।



प्रसिद्ध पत्रिका 'टाइम' ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को तीन बार अपने कवर पेज पर स्थान दिया है। 1930 में गांधीजी को 'मैन ऑफ द ईयर' घोषित किया था। 1999 में पत्रिका द्वारा मशहूर भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन को 'पर्सन ऑफ द सेंचुरी' चुना गया तो महात्मा गांधी दूसरे स्थान पर रहे।

पहली बार लगातार 36 घंटे चलेगा उप्र विधानमंडल का विशेष सत्र

राज्य व्यूरो, लखनऊ

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर बुधवार से शुरू रहे हल उत्तर प्रदेश विधानमंडल का विशेष सत्र बुधवार 11 बजे से शुरू होकर 36 घंटे तक चलेगा। यह पहला अवसर है जब किसी खास अवसर पर सदन की कार्यवाही लगातार इतने लंबे समय तक चलेगी। विपक्ष ने इस सत्र के बहिष्कार का फैसला किया है। सत्र की तैयारियों के लिए मंगलवार को बुलाई गई सर्वदलीय व कार्यमंजणा समिति की बैठक में भी विपक्ष के नेता शामिल नहीं हुए।

समूचे विपक्ष द्वारा विशेष सत्र में भाग नहीं लेने के फैसले से बदले हालात पर रणनीति तैयार करने को सत्तापक्ष की बैठकें देर रात तक जारी रहीं। संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना व मुख्य सचेतक वीरेंद्र सिंह सिरौही ने एजेंडा संशोधित किया। सिरौही ने बताया कि सत्र को शुरूआत में सबसे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बोलेंगे। इसके बाद दल नेताओं को मौका मिलेगा, लेकिन केवल अपना दल (एस) के नेता ही सदन में मौजूद रहेंगे। उनके लिए बोलने की अवधि 15 मिनट से अधिक करने पर सहमति बनी। इस तरह विपक्षी दलों के सदस्य गैरहाजिर रहेंगे तो अन्य सदस्यों को अधिक समय मिलेगा। सभी मंत्रियों के विषय भी तब किए गए हैं। कैबिनेट मंत्रियों को 15-15 मिनट, जबकि राज्य मंत्रियों को 10-10 मिनट मिलेगा। मुख्यमंत्री और दोनों उप मुख्यमंत्री समेत कुल 25 कैबिनेट मंत्री हैं, जबकि नौ स्वतंत्र प्रभार और 22 राज्यमंत्री हैं।

क्या करेंगे विपक्षी दल: दूसरी ओर समाजवादी पार्टी के दल नेता व नेता विरोधी दल रामगोविंद चौधरी ने बताया कि सपा कार्यकर्ता गांधी जयंती पर उनके प्रिय भजन गाएंगे। कांग्रेस ने लखनऊ में प्रियंका गांधी वाड्ढा के नेतृत्व में पदयात्रा करने का फैसला लिया। वहीं, पहली बार उप चुनाव लड़ रही बसपा ने प्रचार को महत्व देते हुए सत्र में शामिल न होने का निर्णय लिया है। कभी सरकार का हिस्सा रही सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ने भी विशेष सत्र के बहिष्कार की घोषणा की है।

विपक्ष की सहमति से ही बुलाया विशेष सत्र: दीक्षित: विपक्षी दलों द्वारा उत्पन्न किए जा रहे गतिरोध पर विस अध्यक्ष हृदयनारायण

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर योगी सरकार का विशेष आयोजन

सभी मंत्री और विधायक होंगे शामिल, विपक्ष करेगा बहिष्कार

एक जैसे परिधान में बापू को याद करने विशेष सत्र में पहुंचेंगे छत्तीसगढ़ के विधायक नईदुनिया, रायपुर: छत्तीसगढ़ विधानसभा का दो दिवसीय विशेष सत्र दो और तीन अक्टूबर को होगा। इस विशेष सत्र में पक्ष और विपक्ष के सभी विधायक खादी के बने एक ही जैसे परिधान में विधानसभा पहुंचेंगे। इस दौरान सदन में महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा होगी। फोटो प्रदर्शनी के अलावा अन्य आयोजन होंगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ विधानसभा के दो दिवसीय सत्र की रूपरेखा तय कर दी गई है। सत्र के दौरान सदन में अंदर राष्ट्रपिता के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा होगी तो सदन के बाहर फोटो प्रदर्शनी समेत अन्य कार्यक्रम होंगे।

दीक्षित ने कहा कि विरोधी दलों के नेताओं की सहमति के बाद ही विशेष सत्र बुलाया गया है। उन्होंने सभी दलों से जनहित में सत्र में भाग लेने का आग्रह किया है। भोजन का प्रबंध भी: प्रमुख सचिव विधानसभा प्रदीप दुबे ने बताया कि 36 घंटे लगातार सदन चलाने का पहला प्रयोग है। इस दौरान सदस्यों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका ध्यान रखा गया है। भोजन व जलपान की भी व्यवस्था रहेगी। नवरात्र के चलते व्रत के आहार का प्रबंध भी किया जाएगा।

सत्र में होंगे 16 सतत विकास लक्ष्य: संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित लक्ष्य विमान 2030 में गरीबी उन्मूलन, भुखमरी समाप्त करना, सबका स्वस्थ जीवन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, सुरक्षित जल व स्वच्छता का सतत प्रबंधन, आधुनिक ऊर्जा, आर्थिक विकास, उद्योगिता अभिनवीकरण एवं अवस्थापना, असमानता कम करना, समावेशी एवं सुरक्षित शहर, सतत उपभोग एवं उत्पादन, जलवायु परिवर्तन, भूमि पर जीवन, शांतिपूर्ण एवं समावेशी संस्थाओं का निर्माण।



बापू की याद में... गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर देशभर में अलग-अलग तरह से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को याद किया गया। इस अवसर पर हरियाणा के कुरुक्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं व स्कूलों में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कुरुक्षेत्र के एक स्कूल में बच्चों व अध्यापकों ने कुछ इस तरह से स्वच्छता का संदेश दिया।

पवन छाबड़ा

5 बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था महात्मा गांधी को। 1948 में पुरस्कार मिलने से पहले उनकी हत्या हो गई थी। इसलिए नोबेल कमेटी ने यह पुरस्कार उस साल किसी और व्यक्ति को नहीं दिया।

बदली तस्वीर नई पीढ़ी के बीच गांधी को लौटा लाने की सच्ची कोशिश है युवा उद्यमी उमंग श्रीधर का स्टार्टअप खाडिजी

चंबल के बीहड़ों और नर्मदा के किनारों से होते हुए लंदन और इटली तक पहुंच रहे डिजिटल प्रिंट वाले खादी परिधान

अभिलाषा सक्सेना, इंदौर

मध्य प्रदेश निवासी 27 वर्षीय उद्यमी उमंग श्रीधर ने नई पीढ़ी के बीच गांधी को लौटा लाने की सच्ची कोशिश की है। फोर्ब्स अंडर-30 में जगह बना चुकी उमंग और उनके स्टार्टअप खाडिजी ने डिजिटल प्रिंट वाले खादी परिधानों को गांवों के कुटीर उद्योग से निकाल वैश्विक बाजार तक पहुंचा दिया है। यही नहीं, गांधी ने ग्राम स्वराज, कुटीर और नारी सशक्तीकरण का जो पाठ पढ़ाया था, उमंग का यह प्रयास उनके उस हर स्वप्न को साकार करने की ओर बढ़ता दिखाता है। उमंग ने चंबल-नर्मदा किनारे बसे पिछड़े गांवों की सैकड़ों महिलाओं के ह्थ में चरखा थमाकर उन्हें स्वावलंबी बना दिया।

कहती हैं, 'बदलते परिवेश में लुप्त होती जा रही खादी पर शोध करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची कि खादी गुप्त होने वाली चीज नहीं है। हाँ, समय और फैशन की मांग के अनुरूप इसमें बस कुछ नए प्रयोग की आवश्यकता है। इसे संजोकर नए रूप में दुनिया को दिखाया जा सकता है। इसी अवधारणा पर खाडिजी (खादी डिजिटल) की शुरुआत की गई।'

सभी जिम्मेदारियां महिलाओं को % मध्य प्रदेश के इंदौर के एक छोटे से गांव किशनगंज में जन्मी और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाली उमंग ने मध्य प्रदेश के जावरा



मध्य प्रदेश के मुरेन के एक गांव में चरखे पर सूत कातती ग्रामीण महिला।

नईदुनिया

(मुरेना) स्थित गांधी सेवा आश्रम से 2017 में यह प्रयास शुरू किया। खादी को नया स्वरूप और नया बाजार दिलाना ही उनका ध्येय था। इसके बाद जाबरोल, चंदेरी और महेश्वर की इसमें बस कुछ नए प्रयोग की आवश्यकता है। इसे संजोकर नए रूप में दुनिया को दिखाया जा सकता है। इसी अवधारणा पर खाडिजी (खादी डिजिटल) की शुरुआत की गई।'

सभी जिम्मेदारियां महिलाओं को % मध्य प्रदेश के इंदौर के एक छोटे से गांव किशनगंज में जन्मी और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाली उमंग ने मध्य प्रदेश के जावरा

गांव अपनी ही अर्थव्यवस्था पर पूर्ण निर्भर

रह सकते हैं: उमंग बताती हैं, 'मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी से पढ़ाई जरूर की, लेकिन ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी होने की वजह से मुझे यह पता था कि गांव अपनी ही अर्थव्यवस्था पर पूर्ण निर्भर रह सकते हैं और हर किसी को शहर जाने की जरूरत नहीं है। लिहाजा, पढ़ाई के बाद 2013 में मैंने खाडिजी कंपनी शुरू की, ताकि गांवों में आय के स्रोत विकसित कर बेहतर की योजना है। महाराष्ट्र और बंगाल में भी कुछ इकाइयों काम कर रही है।'

गांव अपनी ही अर्थव्यवस्था पर पूर्ण निर्भर

एएमयू में पहली बार गांधीजी के साथ नहीं दिखेंगे जिन्ना

संतोष शर्मा, अलीगढ़

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के इतिहास में पहली बार होगा, जब गांधी जयंती पर मौलाना आजाद लाइब्रेरी में लगने वाली प्रदर्शनी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ मुहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर नहीं होगी।

इंजाबिया ने यह निर्णय पिछले साल जिन्ना की तस्वीर को लेकर हुए बवाल के चलते लिया है। मौलाना आजाद लाइब्रेरी में हर साल दो अक्टूबर को बापू से जुड़े ऐतिहासिक चित्र, पुस्तकों व दस्तावेजों की प्रदर्शनी लगाई जाती है। दर्शकों के लिए गांधीजी से जुड़ी 650 से अधिक किताबों को रखा जाता है। इनमें अंग्रेजी में 305, हिंदी में 141, उर्दू में नौ, पारसी व अरबी भाषा में लिखी दो-दो किताबें शामिल हैं।

यूनिवर्सिटी में लगी जिन्ना की तस्वीर बनी थी विवाद: एएमयू में पिछले साल विवाद की शुरुआत यूनिवर्सिटी में लगी जिन्ना की तस्वीर से हुई थी। 30 अप्रैल, 2018 को भाजपा सांसद सतीश गौतम ने कुलपति को पत्र लिखकर तस्वीर हटाने की मांग उठाई। तस्वीर न हटने पर हिंदूवादी छात्र नेताओं ने दो मई को बांबे

मौलाना आजाद लाइब्रेरी में गांधी जयंती पर प्रदर्शनी में नहीं किया जाएगा शामिल

पिछले साल जिन्ना की तस्वीर को लेकर हुए बवाल के चलते लिया निर्णय

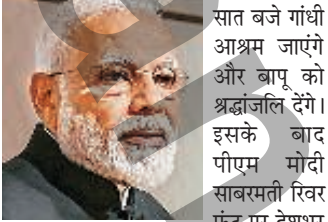
पिछले विवादों को देखते हुए इस बार जिन्ना की तस्वीर प्रदर्शनी में नहीं लगाएंगे। गांधीजी से जुड़ी किताबें, तस्वीरें और बहुत कुछ लोगों को देखने को मिलेगा। - डॉ. मुहम्मद यूसुफ, लाइब्रेरियन एएमयू

सैयद (सैयद गेट) पहुंचकर हंगामा किया। इन नेताओं पर रिपोर्ट लिखाने जा रहे एएमयू छात्रों का पुलिस से टकराव हो गया। लाठीचार्ज में कई छात्र घायल हुए। 15 दिन से अधिक समय तक अरबी भाषा में लिखी दो-दो किताबें शामिल हैं।

इसके बाद दो अक्टूबर को लाइब्रेरी में जिन्ना के साथ गांधीजी की तस्वीर लगा दी थी, जिस पर फिर से मामला गरमाया। लाइब्रेरियन को माफ़ी तक मांगनी पड़ी। फिर से बवाल न हो, इसके चलते जिन्ना की तस्वीर इस बार प्रदर्शनी में नहीं लगाई जाएगी। यूनिवर्सिटी में जिन्ना की तस्वीर आज भी लगी है।

शत्रुज शर्मा, अहमदाबाद

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर बुधवार को भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुजरात दौर पर होंगे। शाम करीब छह बजे यहाँ पहुंचने के बाद वह सात बजे गांधी आश्रम जाएंगे और बापू को श्रद्धांजलि देंगे। इसके बाद पीएम मोदी साबरमती रिवर फ्रंट पर देशभर आंदोलन चला।



से आए 20 हजार सरपंचों का संबोधित करेंगे। इसी समारोह में वह देश के खुले में शौचमुक्त होने की घोषणा करेंगे। वह राज्य सरकार की ओर से आयोजित गरवा महोत्सव में भी शामिल होंगे और मां दुर्गा की आरती करेंगे। अपने पहले कार्यकाल में पीएम मोदी ने घर-घर शौचालय बनवाकर देश को खुले में शौचमुक्त करने का संकल्प लिया था। रिवर फ्रंट पर आयोजित

अहमदाबाद में देशभर के 20 हजार सरपंचों को करेंगे संबोधित

राज्य के 158 केंद्रियों को रिहा करेंगे सीएम रुपाणी

गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री विजय रुपाणी राज्य की जेलों में बंद 158 केंद्रियों को रिहा करेंगे। गुह राज्यमंत्री प्रदीपसिंह जाडेजा ने बताया कि केंद्र सरकार की ओर से जारी दिशा-निर्देश के अनुसार गुजरात सरकार 50-60 फीसद सजा पूरी कर चुके 55-60 वर्ष के 158 केंद्रियों को रिहा करेगी। इसके साथ ही सजापापी पाने वालों की राज्य में संख्या अब 387 हो जाएगी।

समारोह में सरकार, गैर सरकारी संगठन, विविध संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज व कॉर्पोरेट जगत के दिग्गज हिराला लेंगे। इनके अलावा कई देशों के राजदूत, केंद्र व राज्य के मंत्री, पद्म पुरस्कारों से सम्मानित जन, गांधीवादी, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञ आदि मौजूद रहेंगे।

खुले में शौच का चलन फिर बढ़ने लगा: सीएसई

नई दिल्ली, प्रे: भारत को बुधवार को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाना है, लेकिन उससे ठीक एक दिन पहले पर्यावरण मामलों से जुड़े एक थिंक टैंक ने केंद्र की इस पहल पर सवाल उठाए हैं। थिंक टैंक का कहना है कि देश में फिर खुले में शौच की पुरानी प्रवृति बढ़ने लगी है। विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र (सीएसई) ने कहा है कि पिछले बार साल के दौरान भारत के 60 लाख गांवों में 10 करोड़ और शहरों में 63 लाख शौचालयों का निर्माण कराया गया है। संस्था ने इन शौचालयों के काम करते रहने को लेकर आशंका जताई है। सीएसई की महानिदेशक सुनीता नारायण ने कहा, 'महज पांच साल पहले तक भारत में खुले में शौच करने वाले दुनिया के 60 फीसद लोग रहते थे। अगर भारत ने खुले में शौच से मुक्ति यानी ओडीएफ का दर्जा हासिल कर लिया है तो यह न सिर्फ उसके लिए बल्कि दुनिया के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह दुनिया को शौचालयों के सार्वभौमिक कवरज और उत्सर्जन के सुरक्षित निपटान के अपने सतत विकास के लक्ष्य में एक लंबी छलांग होगी।'

भित्तिहरवा की उदासियां, चंपारण की चिंताएं और ग्राम स्वराज

मनोज झा, गांधी आश्रम भित्तिहरवा (परिचय चंपारण)

मोतिहारी के बापूधाम रेलवे स्टेशन से आगे चलकर बेतिया और फिर नरकटियागंज के रास्ते थोड़े-थोड़े अंतराल पर हरे रंग की सरकारी पट्टिकाएं और दिशासूचक साइनबोर्ड गांधी की चंपारण यात्रा और उनके प्रवास से जुड़े स्थलों की अहमियत का अहसास कराने लगते हैं। गन्ने व धान के खेतों और बरसाती नदियों से घिरे विशुद्ध ग्रामीण परिवेश वाले इस इलाके में एक गांव भित्तिहरवा भी है। संकरी-सड़क के किनारे बसा भित्तिहरवा आज भी गांधी की चंपारण यात्रा की महान स्मृतियों को अपने सीने से संजोए है। आज से 102 साल पहले लोनी ने स्वतंत्रता आंदोलन में सत्याग्रह की पहली आहुति इसी स्थान पर दी थी। नील खेतिहरों के दुर्दमनीय दुखों का अंत करने आए गांधी की पहली राजनीतिक सफलता का गवाह भी है यह भित्तिहरवा गांव। यहाँ के गांधी आश्रम में मोहनदास के महात्मा गांधी की पूरी कहानी टुकड़े में ही रही, लेकिन जगह-जगह बिखरी हुई है। आश्रम में गांधी कुटी और चित्र दीर्घा

की भित्तियों पर स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा के अतुलनीय योगदान को सहेजने का प्रयास दिखाई देता है। ब्रामदे में बापू और कस्तूरबा की आदमकद मूर्तियाँ हैं तो दीवारों पर गांधी के भजन और कथन लिखे हुए हैं। हलाकि, आश्रम के बाहर गांव के अंदरूनी हालात देखकर लगता है कि एक सदी के सफर के बाद आज भी भित्तिहरवा क्षेत्र के किसान परेशान हैं, चंपारण की चिंताएं अभी बनी हुई हैं और गांधी का ग्राम स्वराज का संकल्प पूरा होना अभी बाकी है।

गांधी के आदर्श ग्राम और भित्तिहरवा के बीच अभी बड़ा फासला दिखाई देता है। चेहरा बदलकर ही रही, कई चिंताएं यहाँ आज भी बनी हुई हैं। नील की जगह गन्ने ने तो अंग्रेजों की जगह मिल मालिकों ने ले ली है। गन्ना भुगतान लटकने के चलते कई किसान पाई-पाई के मोहताज हैं। बाजार न होने के चलते धान किसानों को अपनी फसल औने-पौने दाम में बेचनी पड़ती है। गांव में स्वरोजगाह भी कहीं नजर नहीं आता और कई परिवार घोर गरीबी की गिरफ्त में हैं। दो जून की रोटी के जुगाड़ में कई लोग गांव-गिरांव से दूर बड़े शहरों में पलायन

चंपारण के इलाके में आज भी किसान-मजदूरों की परेशानियों का अंत नहीं



भित्तिहरवा आश्रम।



जागरण

गांधी की पहली राजनीतिक सफलता का गवाह भित्तिहरवा गांव



भित्तिहरवा आश्रम के सामने स्थित कस्तूरबा कान्वा उच्च माध्यमिक विद्यालय।

कर गए हैं। कुछ यही हाल यहाँ के छह शय्या वाले सरकारी अस्पताल का है। डॉक्टर की तैनाती न होने के कारण शायद ही कोई ग्रामीण इधर का रुक करता है। गांव के अंदर की सड़क भी अभी नहीं बनाई है। कभी भित्तिहरवा के नजर नहीं आता और कई परिवार घोर गरीबी की गिरफ्त में हैं। दो जून की रोटी के जुगाड़ में कई लोग गांव-गिरांव से दूर बड़े शहरों में पलायन

थी। बा ने यहाँ महिलाओं की जागरूकता को लेकर भी बहुत काम किया। बाद में पुंडलीक जी कातपडे उर्फ गुरुजी के प्रयासों से यहाँ शिक्षा के प्रचार-प्रसार का अतुलनीय अभियान चलाया गया था। आज यहाँ शिक्षा की दशा-दिशा ठीक दिखाई नहीं देती। श्रीरामपुर गांव भित्तिहरवा पंचायत के अंदर है। पंचायत में तीन सरकारी स्कूल हैं। महज

चार प्राइमरी शिक्षकों के बूते चल रहे उत्कृष्टतम हाई स्कूल की विडंबना देखिए कि बिना किसी कक्षा या पढ़ाई-लिखाई के हर साल करीब 100 विद्यार्थी यहाँ से मैट्रिक की परीक्षा देते गये थे। कुछ यही हाल बुनियादी विद्यालय हो। जहाँ विद्यार्थी तो हैं, लेकिन शिक्षकों का टोटा है। गांधी आश्रम से ठीक पहले सड़क की दूसरी ओर कस्तूरबा बालिका उच्च विद्यालय

में चहल-पहल तो है, लेकिन इसका दुर्भाग्य यह है कि सरकार ने इस ओर से आंख फेर रखी है। 1981 में स्थापित और तब से पूरी तरह जनसहयोग से चल रहे इस स्कूल को तमाम कोशिशों के बावजूद अब तक मान्यता नहीं मिल पाई है। शायद यह गांधी जी के सत्याग्रह की सीख का ही कमाल है कि इस स्कूल के अलावा कपूरी ठाकुर, लालू प्रसाद, राहुल गांधी, बाबा रामदेव, यशवंत सिन्हा, एएस आगरर जैसे हस्तियां यहाँ समय-समय पर आती रहीं हैं। इसके चलते आश्रम परिसर में

कमोवेश निर्माण कार्य आदि दिखाई भी पड़ता है, लेकिन जहाँ तक भित्तिहरवा के भीतर झांकने का सवाल है तो उसकी उदासियां मिटाने का कोई सत्याग्रही संकल्प लिया जान अभी बाकी है। तब तक भित्तिहरवा भी उन गांवों की कतार में खड़ा है, जो गांधी के ग्राम स्वराज के सपने से अभी बहुत दूर है। सेवानिवृत्त गांधीवादी शिक्षक शिव शंकर चौहान ने इन स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से चंपारण क्षेत्र का दर्द बयां करने का प्रयास किया है। वह लिखते हैं- खूब बढ़ी कीमत दिल्ली में धान, खेह और गन्ने की, लेकिन विदा न हो सके बेटियां किसान की, क्या यही विकास है चंपारण के किसान की। फिर भी वह कहते हैं बापू ने भित्तिहरवा से ही पूरी दुनिया को सत्याग्रह की ताकत का अहसास कराया था। हम हिम्मत नहीं हारेंगे और यहाँ के उत्थान के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। उनका सपना है कि भित्तिहरवा की साबरमती या गांधी जी से जुड़े अन्य स्थलों की तरह विकास हो। इसे एक तीर्थ की तर्ज पर आदर्श ग्राम की तरह संवारा जाए, ताकि लोग यहाँ आकर देखें कि गांधी के सपनों का गांव कुछ ऐसा है।

कफरूँ में पाकिस्तानी क्रिकेट, गंभीर ने उड़ाया मजाक

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: क्रिकेटर्स से नेता बने गौतम गंभीर ने ट्विटर पर एक वीडियो साझा किया और कराची में श्रीलंका एवं पाकिस्तान के बीच हुए वनडे मैच के लिए की गई सुरक्षा के इंतजामों पर चुटकी ली। पाकिस्तान के व्यक्ति द्वारा रिकॉर्ड किया गया वीडियो साझा करते हुए गंभीर ने ट्वीट किया कि इतना कश्मीर-कश्मीर किया कि कराची भूल गए। 26 मिनट के वीडियो में कराची के दो व्यक्ति एक कार में बैठे हुए हैं और श्रीलंका के खिलाफ जारी तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए की गई सुरक्षा के इंतजामों का मजाक उड़ा रहे हैं। दो व्यक्ति यह दिखा रहे हैं कि कैसे कफरूँ जैसी स्थिति में क्रिकेट खेला जा रहा है। श्रीलंका की टीम को दूसरे वनडे मैच के लिए कराची स्थित नेशनल स्टेडियम ले जाने के दौरान करीब 20 गाड़ियाँ मौजूद थीं। पाकिस्तान ने मैच को 67 नून से अपने नाम किया था। बता दें कि सोमवार को खेला गए दूसरे वनडे में एक समय मैदान की फूलों लाटने भी खराब हो गई थी, जिसकी वजह से काफी देर तक मैच रुका रहा था।

अपनी आवाज देंगी। फिल्म में ऐश्वर्या केंद्रीय किरदार मेलफिसेंट के लिए हिंदी में होगी।